ISSN 2394-756X

एग्रोक्सी

फसल क्रांति

मूल्य: एक प्रति 60 रुपये

वर्ष – 12 अंक – 07 | www.fasalkranti.in | हरियाणा | जुलाई 2025

फसल उत्पादन में बीज जमाव परीक्षण एवं बीज उपचार का महत्व

हमें विकसित कृषि की भी चर्चा करनी होगी- डॉ. राजबीर सिंह

हेल्दी क्रॉप, हैप्पी प्लैनेट के सिद्धांत पर काम करना एडीग्रो का मुख्य उद्देश्य- अजय जावला

संतुलित और पोषक उत्पादों से बढ़ेगी किसानों की फसल पैदावार- दीपक चौधरी

+91-9625941688 | info@fasalkranti.in

GROWING TOGETHER

bkt-tires.com

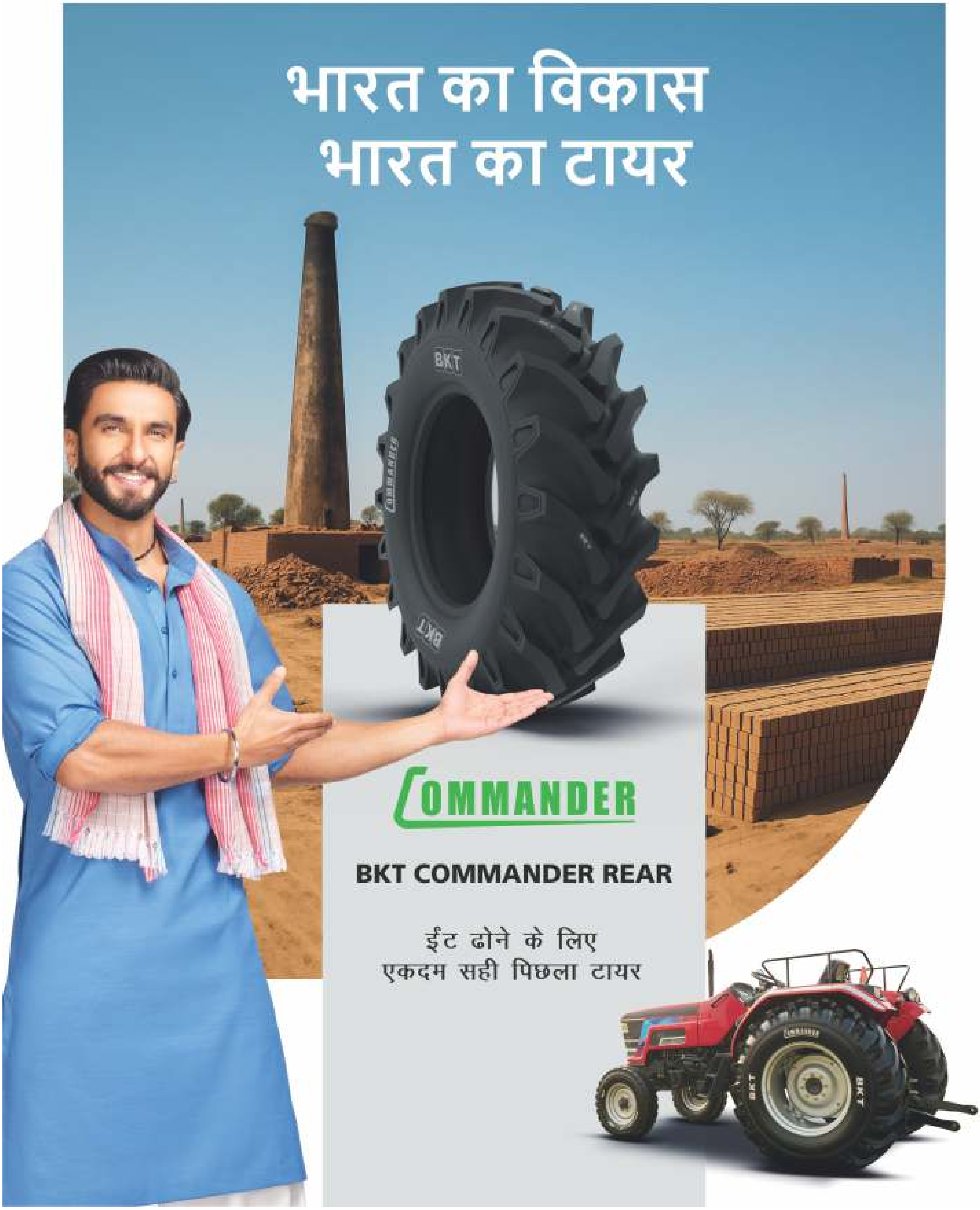

Kan Biosys®
THE MICROBIAL COMPANY

किसान भाईयों, जैविक खेती ही भविष्य हैं!

500000+ किसान | **3000+** पार्टनर्स | **30+साल** का अनुभव

किसानों का भरोसा मुझ पर और मेरा भरोसा कॅन बायोसिस पर !!!

खाद एवं बीज भंडार

कृषि क्षेत्र में अग्रणी भारतीय जैविक MNC कंपनी के भागीदार बनें!

नए भारत के निर्माण के लिए कृषि और किसान ही आधार हैं!

स्कैन करें

वितरक नियुक्त करना है

KHETI KI JAAN

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें +91 84840 06196 | +91 84840 06806

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा
100% Swadeshi
ACE
TRACTORS
पेश है नया
ACE DI 6565AV 60.5 HP
TREM-IV ENGINE
4
सिलिण्डर का
4088 CC
दमदार इंजन
4 सिलिण्डर 4088 CC हाई टार्क हैवी ड्यूटी इंजन
2000 kg लिफ्ट
तेल में डूबे ब्रेक (O.I.B.)
डूयल क्लच (D.C.)
पॉवर स्टीयरिंग (P.S.)
आगे के टायर 7.5 x 16
पीछे के टायर 16.9 x 28
ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध
कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004
अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध
रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883
ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

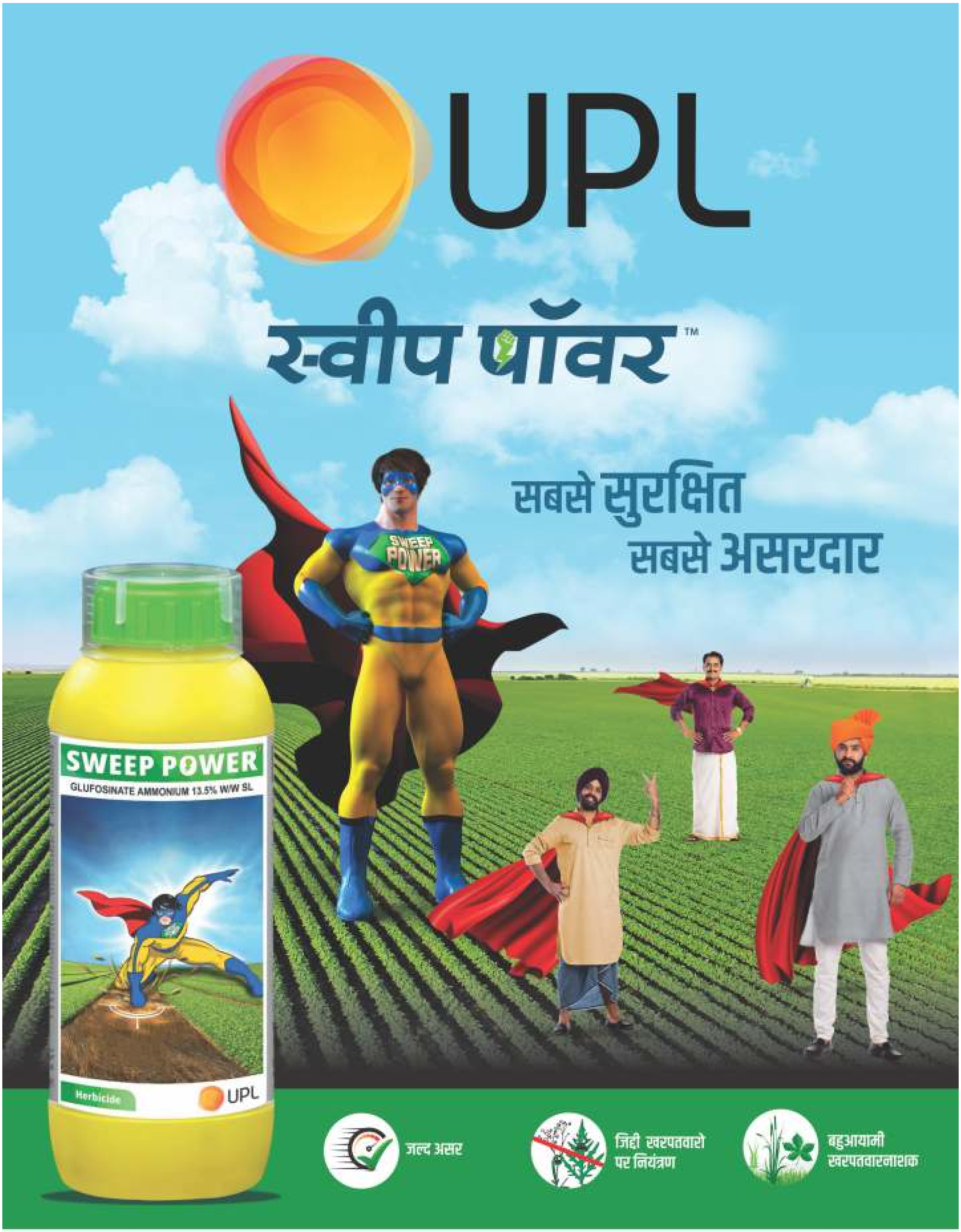

nurture.farm अधिक जानकारी के लिये नर्चर केयर पर कॉल करें 18001021199

विषयावली

एग्रोक्सी
फसल क्रांति
मासिक कृषि पत्रिका

वर्ष 12 जुलाई 2025 अंक 07

संपादकीय....07

एग्री न्यूज....10

कम्पनी न्यूज....20

किसानों के लिए 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का आयोजन सफल रहा– डॉ. डी. के. राणा....35

हेल्दी क्रॉप, हैप्पी प्लैनेट के सिद्धांत पर काम करना एडीग्रो का मुख्य उद्देश्य– अजय जावला....36

हमें विकसित कृषि की भी चर्चा करनी होगी – डॉ. राजबीर सिंह....38

संतुलित और पोषक उत्पादों से बढ़ेगी किसानों की फसल पैदावार – दीपक चौधरी....39

दोगुनी आय का सपना सच होगा! अंबर क्रॉप के ये प्रोडक्ट्स बदल रहे हैं किसानों की तकदीर....40

बायोफ्यूल क्षेत्र से जुड़कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं– रफीक मांकड....42

50 बॉक्स से शुरू किया मधुमक्खी पालन, अब बन चुके हैं दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत....43

फसल उत्पादन में बीज जमाव परीक्षण एवं बीज उपचार का महत्व....44
– संजय श्रीवास्त

जुलाई महीने के कृषि कार्य....46
राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम

रसोई....48

सेहत....49

कुल पृष्ठ संख्या 56

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं प्रकाशक/सम्पादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजबीर सिंह **द्वारा स्वामी** एग्रोक्सी क्रॉप्स सोल्यूशंस प्रा. लिमिटेड **के लिए** रावत प्रिंटर्स, सी –177, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस –1, नई दिल्ली –110028 **से मुद्रित** तथा एक्स–96/1, गली न. 12, ब्रह्मपुरी, शाहदरा, दिल्ली–110053 **से प्रकाशित, सम्पादक** राजबीर सिंह।

सम्पर्क

ए–9, वेस्ट ज्योति नगर, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा, दिल्ली – 110094
011–45062737
in.linkedin.com/in/fasal-kranti-972698129
info@fasalkranti.in
www.fasalkranti.in
facebook.com/fasalkranti
instagram.com/fasalkranti/
twitter.com/fasalkranti
+91 9625941688, 9811250220

सलाहकार मण्डल

डॉ. एम.एल. जाट, सचिव (डीएआरई) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
डॉ. बलराज सिंह, कुलपति, श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान
डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, कुलपति, डी.यू.वी.ए.एस.यू. मथुरा
डॉ. ए.एस. पंवार, पूर्व निदेशक, आई.आई.एफ.एस.आर., मेरठ
डॉ. आनंद शर्मा, उप–महानिदेशक, भारतीय मौसम विभाग
डॉ. सौमित्र दास, निदेशक–इंडिया इण्टरनेशनल जिंक एसोसिएशन
डॉ. एस. एन. भेंड़े, कन्ट्री एग्रोनोमिस्ट, मोजैक इंडिया प्रा.लि., गुड़गांव

सम्पादक मण्डल

डॉ. के. एन. तिवारी, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, लखनऊ
डॉ. जे.पी.एस. डबास, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा
डॉ. जे. पी. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान, चौ.च.सिं.ह.कृ.वि.वि., हिसार
डॉ. एस. एस. लठवाल, प्रधान वैज्ञानिक, एन.डी.आर.आई., करनाल
डा. धीरज कुमार तिवारी, वैज्ञानिक शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र, उन्नाव
डॉ. गजानन्द जाट, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
डॉ. आर. एच. मीणा, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
श्री राम निवास चौधरी, सहा. अनु. वैज्ञानिक, आनंद कृषि वि.वि., आनंद, गुजरात

संस्थापक	–	राजबीर सिंह
निदेशक	–	राजबीर सिंह
उपनिदेशक	–	श्याम सिंह
सम्पादक	–	राजबीर सिंह
कानूनी सलाहकार	–	संतोष प्रताप
वरिष्ठ पत्रकार	–	विपिन मिश्र
	–	इमरान इदरीसी
पत्रकार	–	फिजा काजमी
संवाददाता	–	आर्यामन यादव
सोशल मीडिया मुखी	–	प्रदीप राणा
विडियो एडिटर	–	अयूष कुमार
निदेशक (मार्केटिंग)	–	रितिक कुमार
उपाध्यक्ष (मार्केटिंग)	–	फरहा खान
महाप्रबंधक (मार्केटिंग)	–	आरिफा खान
प्रबन्धक (विपणन)	–	तन्नू सिंह
सीनियर मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	निशा गुप्ता
मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	आकांक्षा वर्मा अंशिका वर्मा हिमांशी सैन
एकाउंट्स	–	एम सिद्दीकी
प्रसार सहायक	–	सनी चौधरी मोहित सिंह
सोशल मीडिया प्रबंधक	–	निशा शर्मा मनप्रीत कौर
डिजाइनिंग	–	धर्मेंद्र कुमार
कार्यालय सहायक	–	अंकित चौधरी रितु

सम्पादक की कलम से,

पर्यावरण सुरक्षा और खरीफ फसलों की टिकाऊ उच्च उत्पादन के लिए नैनो उर्वरकों का महत्व

उर्वरकों का संतुलित और कुशल प्रयोग फसल पोषण, फसलों की उपज वृद्धि, उत्पाद की गुणवत्ता वृद्धि और किसानों के आर्थिक लाभ को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, सटीक पोषक तत्व प्रबंधन टिकाऊ हरित कृषि के लिए महत्वपूर्ण है, किन्तु यह एक बड़ी चुनौती भी है, क्योंकि फसलों को पोषक तत्वों की सही खुराक देने के लिए जो पारंपरिक रासायनिक उर्वरक प्रयोग किए जाते हैं उनकी दक्षता बहुत ही कम है। उदाहरण के लिए नाइट्रोजन के लिए यह क्षमता मात्र 30–40 प्रतिशत, फॉस्फोरस के लिए 15–20 प्रतिशत, पोटेशियम और सल्फर के लिए 40–50 प्रतिशत और पर्यावरणीय नुकसान जैसी संबंधित समस्याओं के कारण सूक्ष्म पोषक तत्वों के लिए 5 प्रतिशत से कम है। नैनो उर्वरक बढ़ी हुई पोषक तत्व उपयोग दक्षता के माध्यम से कुशल पोषक तत्व प्रबंधन प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, नैनो उर्वरक अजैविक तनाव सहनशीलता को भी बढ़ाते हैं तथा कई और लाभ सुनिश्चित करते हैं।

नैनो प्रौद्योगिकी अनुसंधान का एक आशाजनक क्षेत्र है, जिसमें आधुनिक गहन कृषि के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए स्थायी उपाय पेश करने की क्षमता है। नैनो तकनीक में नैनोमटेरियल का इस्तेमाल किया जाता है, जिसका आकार आमतौर पर 100 नैनोमीटर से कम होता है और यह अत्यंत छोटा आकार नैनोमटेरियल को अनूठी विशेषताएँ और लाभ प्रदान करता है। नैनो तकनीक में सीमित इनपुट के साथ कृषि उत्पादकता को बढ़ाकर सतत हरित कृषि के मिशन को मजबूत करने की क्षमता है। जलवायु परिवर्तन के वर्तमान विषम चुनौतीपूर्ण वातावरण में फसल सुधार के लिए नैनो उर्वरक एक महत्वपूर्ण समाधान प्रदान कर सकता है। नैनो उर्वरक पौधों की पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ फसल उत्पादन प्रणालियों को स्थिरता प्रदान करने की क्षमता रखते हैं और वह भी फसलों की उपज से समझौता किए बिना।

उर्वरक उपयोग के सिद्धांत को कम संसाधन का उपयोग करने और रासायनिक दुष्प्रभावों से मुक्त होने के लिए जाना जाता है। नैनोस्ट्रक्चर्ड फॉर्मूलेशन पर्यावरणीय संकेतों और फसलों की पोषक तत्वों की मांग के अनुरूप सक्षम तरीके से तत्व प्रदान करते हैं। नैनोउ र्वरकों में टिकाऊ हरित कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देने की विशेष क्षमता है। इफको ने किसानों को नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, नैनो जिंक और नैनो कॉपर के रूप में डिजाइन किए गए स्मार्ट हाई–टेक समाधानों के माध्यम से उनके उपयोग की सुविधा प्रदान करने की शुरुआत की है। निस्संदेह ये नैनो उर्वरक स्मार्ट कृषि के लिए एक गेम चेंजर साबित होंगे।

इफको ने 3 नवंबर, 2019 को कलोल, गांधीनगर, गुजरात में नैनो जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (एनबीआरसी) की स्थापना की। सतत हरित कृषि का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एनबीआरसी ने नैनो यूरिया प्लस (उन्नत संस्करण), नैनो डीएपी, नैनो जिंक और नैनो कॉपर तैयार किया है जिन्हें उर्वरक नियंत्रण आदेश में शामिल किया गया है और इफको ने इन स्मार्ट उर्वरकों को बाजार में उतारा है जिनके प्रति किसानों का रुझान सतत बढ़ रहा है। निष्कर्ष रूप में नैनो–प्रौद्योगिकी आधारित उर्वरकों में भारतीय और साथ ही वैश्विक कृषि को बदलने की क्षमता है।

इस अंक में प्रकाशित "नैनो उर्वरकों का पर्यावरण सुरक्षा और खरीफ फसलों का उत्पादन बढ़ाने में महत्व" विषयक लेख में खरीफ फसलों में इफको नैनो उर्वरकों के बढ़ते महत्व, प्रयोग विधि, सावधानियों आदि की विस्तृत चर्चा की गयी है।

प्रो. (डॉ.) के. एन. तिवारी
वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक

संपादकीय

RMPCL
ZIRON
Committed to Quality
नया तरीका, नई उमंग,
मेरी फ़सले बढ़ेगी ZIRON के संग
फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, ज़िंक, बोरॉन
से खरीफ में दिखेगा असली फर्क।
RMPCL
ZIRON
POWER+
50 kg
यही है किसान के उन्नति का सही फॉर्मूला
www.rmphosphates.com
Toll free: 8956926412

IFFCO - MC
CROP SCIENCE
(A Joint Venture of IFFCO & Mitsubishi Corporation)

किसान सुरक्षा बीमा योजना
उचित मूल्य
विश्वसनीय उत्पाद
बेहतर गुणवत्ता
सभी क्षेत्रों में उपलब्धता

नए उत्पादों का आगाज
फसल सुरक्षा के लिए

*इफको–एमसी उत्पाद खरीदने पर मुफ्त दुर्घटना बीमा

Follow us : iffcomc IFFCO-MC Crop Science Pvt Ltd @iffcomc

एग्री न्यूज

उत्तर प्रदेश की कृषि रणनीति में जीन एडिटिंग को बढ़ावा मिला

उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रयास तेज हो रहे हैं, वहीं तकनीकी नवाचार को विकास के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में स्थापित किया जा रहा है। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एएनडीयूएटी) में आयोजित 'फसल सुधार के लिए जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग' नामक राज्य स्तरीय कार्यशाला में मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. के वी राजू ने विज्ञान और उन्नत प्रौद्योगिकियों पर आधारित कृषि आधुनिकीकरण के लिए एक महत्वाकांक्षी रोडमैप प्रस्तुत किया।

मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. के वी राजू ने कहा कि पिछले आठ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने उल्लेखनीय आर्थिक विकास देखा है, राज्य का सकल घरेलू उत्पाद लगभग 30 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है और यह 14 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कृषि इस प्रगति का आधार बनी हुई है। हालांकि, चावल और गेहूं जैसी प्रमुख फसलों में स्थिर उत्पादकता एक बढ़ती हुई चिंता है। हमें कृषि में अगली परिवर्तनकारी लहर को आगे बढ़ाने के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की संयुक्त वैज्ञानिक विशेषज्ञता का उपयोग करना चाहिए।

एफएसआईआई के कार्यकारी निदेशक राघवन संपत कुमार ने वैज्ञानिक नवाचार को अपनाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि देरी कोई विकल्प नहीं है। हमें ऐसी तकनीकें अपनानी चाहिए जो जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का समाधान करने में मदद करें। बीसीआईएल की मुख्य महाप्रबंधक डॉ. विभा आहूजा ने कहा कि जबकि जीएम फसलों से जुड़ी नियामक चुनौतियों का समाधान किया जा रहा है, हमारा लक्ष्य सक्रिय भागीदारी के माध्यम से जैव प्रौद्योगिकी को तेजी से अपनाना है। भारतीय प्रयोगशालाओं में महत्वपूर्ण शोध चल रहा है, और अब समय आ गया है कि इसे खेत स्तर पर ठोस लाभों में बदला जाए। उन्होंने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा हाल ही में दो जीन–संपादित चावल किस्मों को जारी करने को एक सकारात्मक कदम बताया। युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, एएनडीयूएटी के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह ने कहा कि छात्रों और शोधकर्ताओं को उन्नत ज्ञान से सशक्त बनाना उत्तर प्रदेश को कृषि जैव प्रौद्योगिकी में अग्रणी बनाने की कुंजी है।

IRRI

आईआरआरआई ने बीज त्वरक सम्मेलन की मेजबानी की

भारत में हाल ही में जारी की गई, उच्च प्रदर्शन वाली चावल की किस्मों को अपनाने में तेजी लाने के लिए, अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (IRRI) ने हैदराबाद में बीज त्वरक मीट 2025 का एक राष्ट्रीय–स्तरीय सभा आयोजित की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में अनुसंधान संस्थानों और बीज व्यावसायीकरण और वितरण भागीदारों के बीच समन्वय बढ़ाकर भारत के चावल बीज वितरण पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना था।

बीज त्वरक सम्मेलन 2025 में सहयोगात्मक, मांग–संचालित बीज वितरण तंत्र को बढ़ावा देकर इस अंतर को पाटने पर ध्यान केंद्रित किया गया, ताकि किसानों को जलवायु–अनुकूल, उच्च उपज देने वाली और पोषण से भरपूर चावल की किस्में उपलब्ध कराई जा सकें।

इस सत्र की अध्यक्षता आईआरआरआई की दक्षिण एशिया लीड फॉर सीड सिस्टम्स डॉ. स्वाति नायक, आईआरआरआई के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रजनन प्रमुख डॉ. विकास कुमार सिंह, आईसीएआर–अटारी, कोलकाता जोन वी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे और एडवांटा सीड्स, हैदराबाद के आरएंडडी प्रमुख डॉ. सतीश पारीक ने की।

इस कार्यक्रम का नेतृत्व आईआरआरआई की डॉ. स्वाति नायक, दक्षिण एशिया लीड फॉर सीड सिस्टम्स और डॉ. विकास कुमार सिंह, दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रजनन प्रमुख ने किया। इसमें राज्य बीज निगमों, निजी बीज कंपनियों, छोटे और मध्यम बीज उद्यमों, अटारी और किसान उत्पादक कंपनियों (एफपीसी) के प्रतिभागी शामिल थे।

कार्यक्रम के समापन पर, संयोजकों ने सभी हितधारकों से एक चुस्त और समावेशी बीज प्रणाली के निर्माण में अपनी भूमिका को मजबूत करने का आग्रह किया। बीज त्वरक मीट 2025 ने भारत के चावल क्षेत्र में एक रणनीतिक भागीदार के रूप में IRRI की भूमिका को मजबूत किया। इस आयोजन के परिणाम वैरिएटल परिनियोजन और बीज प्रणाली विकास पर राष्ट्रीय रणनीतियों का मार्गदर्शन करेंगे।

देहात
बीज से बाज़ार तक
उत्पाद दमदार
धान को मिले, सुरक्षा शानदार!
DeHaat
ATAQUE GR
DeHaat
BEESO
1 Litre
DeHaat
LYMENTRIA
PYRAZOSULFURON ETHYL 10% WP
अधिक जानकारी के लिए 1800-1036-110 पर कॉल करें

धान के समर्थन मूल्य में मामूली 3 प्रतिशत की वृद्धि

कैबिनेट ने 2025–26 खरीफ सीजन (जुलाई–जून) के लिए प्रमुख खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में 1–9 प्रतिशत की सीमा में वृद्धि को मंजूरी दे दी, लेकिन धान के समर्थन मूल्य को मामूली 3 प्रतिशत बढ़ाकर 2369 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया। अगले खरीफ सीजन के लिए धान के समर्थन मूल्य में की गई वृद्धि, जिसके लिए बुवाई शुरू होने वाली है, पांच साल में सबसे कम है।

केंद्रीय पूल में चावल के बड़े अधिशेष स्टॉक के साथ, सरकार किसानों को विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा जैसे उत्तरी क्षेत्रों में दालों और तिलहन जैसी अधिक लाभकारी फसलों की ओर विविधता लाने का संकेत देना चाहती है। सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि इस फैसले के कारण, किसानों को इस सीजन में एमएसपी के रूप में 2.07 लाख करोड़ रुपये से अधिक मिलेंगे। कृषि और संबद्ध क्षेत्र में किसानों की आय और सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) कई कारकों का परिणाम है। एमएसपी और समर्थन मूल्य पर खरीदी गई वास्तविक मात्रा के अलावा, इनमें फसल उत्पादन, खुले बाजार में विभिन्न हितधारकों द्वारा मूल्य प्राप्ति और निर्यात शामिल हैं। आगामी खरीफ सीजन में खाद्यान्न उत्पादन 2025–26 फसल वर्ष (जुलाई–जून) में 354.64 मिलियन टन (एमटी) खाद्यान्न उत्पादन का रिकॉर्ड होने का अनुमान है, जो चालू (2024–25) फसल वर्ष के लक्ष्य से 4 प्रतिशत अधिक है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में कहा कि देश 2025–26 के दौरान 3.5 प्रतिशत कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर हासिल करने की संभावना है। वित्त वर्ष 25 में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में जीवीए में 3.8 प्रतिशत (दूसरा अग्रिम अनुमान) की मजबूत वृद्धि हुई, जबकि वित्त वर्ष 24 में यह 1.4 प्रतिशत थी। वर्तमान में, केंद्रीय पूल में चावल का स्टॉक 37.9 मिलियन टन (MT) है। प्रभावी रूप से, भारतीय खाद्य निगम के पास 59 मीट्रिक टन से अधिक अनाज है – जिसमें मिलर्स से प्राप्त होने वाला 21 मीट्रिक टन अनाज शामिल है – जो 1 जुलाई के लिए 13.54 मीट्रिक टन के बफर से चार गुना अधिक है।

फसल पैदावार बढ़ाने के लिए डंक रहित मधुमक्खी की प्रजाति की खोज हुई

नागालैंड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने डंक रहित मधुमक्खियों की ऐसी प्रजातियों की पहचान की है, जिनका उपयोग परागण के माध्यम से कृषि उपज की गुणवत्ता और मात्रा बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। पहचानी गई डंक रहित मधुमक्खियों की प्रजातियाँ टेट्रागोनुला इरिडिपेनिस स्मिथ और लेपिडोट्रिगोना आर्किफेरा कॉकरेल हैं।

यह शोध कई प्रतिष्ठित, सहकर्मी–समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है, जिसमें इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्म साइंसेज भी शामिल है।

नागालैंड विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान विद्यालय के कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक और प्रधान अन्वेषक (एआईसीआरपी हनीबीज एंड पोलिनेटर्स) अविनाश चौहान ने कहा कि बिना डंक मारे जाने के डर के बिना डंक रहित मधुमक्खियों का उपयोग परागण के लिए किया जा सकता है। वे अपने लोकप्रिय औषधीय शहद और परागण क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

चौहान ने कहा कि हमारी टीम ने पाया कि इन मधुमक्खियों द्वारा परागण किए जाने पर मिर्च की फसल में परागण न किए जाने वाली फसल की तुलना में फसल उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि होती है। मिर्च में परागण की कमी को पूरा करने के लिए, डंक रहित मधुमक्खियों और ए डोर्सटा, ए फ्लोरिया जैसी मधुमक्खी प्रजातियों और अन्य जंगली मधुमक्खियों जैसे हैलिकटिड मधुमक्खियों, सिरफिड मधुमक्खियों और एमेजिएला मधुमक्खियों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि हम अभी भी मधुमक्खी पालन की तकनीकों को बेहतर बनाने और बेहतर शहद उत्पादन और फसलों के परागण के लिए मधुमक्खियों और डंक रहित मधुमक्खियों के साथ वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। अन्य जंगली मधुमक्खियों और परागणकों के संरक्षण के लिए लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

हालांकि, पिछले 7–10 वर्षों में, वैज्ञानिक छत्तों के विकास और रानी कोशिकाओं का उपयोग करके डंक रहित मधुमक्खी कालोनियों के बड़े पैमाने पर गुणन को शामिल करते हुए इन मधुमक्खियों का वैज्ञानिक पालतूकरण नागालैंड में हासिल किया गया है और इसे मेघालय और अरुणाचल प्रदेश जैसे अन्य राज्यों में भी विस्तारित किया गया है।

FertiGlobal®
ट्रांसप्लांटेशन शॉक से मुक्ति
बेहतर बढ़वार एवं ज्यादा कल्ले
अजैविक और जैविक तनाव से मुक्त फसल
मजबूत और स्वस्थ बाली निर्माण में सहायक
फफूंद जनित रोगों के लिए प्रतिरोध क्षमता
बेहतर फूल - फल का निर्माण एवं विकास फल एवं फूल के गिरने से बचाव
FertiGlobal® DINAMICO 1kg
FertiGlobal® MAIA
Semia
FertiGlobal® DOLCE 1kg
Mantus
FertiGlobal® COLORE 1kg
Helpline Number
9878247699
Larderello Group
Italian tradition, global horizons. Since 1818.
SCL India
sclindia@fertiglobal.com, www.fertiglobal.com

पंजाब सरकार ने बासमती फसल पर 11 कीटनाशकों के प्रयोग पर 1 अगस्त से 60 दिनों के लिए प्रतिबंध लगाया

पंजाब के बेशकीमती बासमती चावल की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और गुणवत्ता की रक्षा करने के उद्देश्य से एक निर्णायक कदम उठाते हुए, राज्य सरकार ने बासमती फसलों पर इस्तेमाल के लिए ग्यारह विशिष्ट कीटनाशकों की बिक्री, वितरण और उपयोग पर 60 दिनों के प्रतिबंध की आधिकारिक अधिसूचना जारी की है। हालाँकि यह अधिसूचना 10 मई, 2025 को पंजाब सरकार के राजपत्र में प्रकाशित की गई थी, लेकिन प्रतिबंध का प्रवर्तन 1 अगस्त, 2025 से शुरू होगा, जिससे किसानों और कृषि–इनपुट डीलरों को नए निर्देश के अनुकूल होने का समय मिल जाएगा।

कृषि और किसान कल्याण विभाग की अपनी आधिकारिक अधिसूचना में बताया कि यह निर्णय यह सुनिश्चित करने के हित में लिया गया है कि पंजाब का बासमती चावल हानिकारक कीटनाशक अवशेषों से मुक्त रहे, अन्यथा इसकी वैश्विक मांग और अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुपालन को खतरे में डाल सकता है। राज्य सरकार के अनुसार, पंजाब राइस मिलर्स एंड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन द्वारा जांचे गए बासमती चावल के कई नमूनों में कीटनाशक अवशेषों का स्तर स्वीकार्य सीमा से कहीं अधिक पाया गया। इन निष्कर्षों ने व्यापार और निर्यात समुदाय के भीतर गंभीर चिंताएँ पैदा कर दी थीं। जवाब में, एसोसिएशन ने निर्यात अस्वीकृतियों और पंजाब के विरासत बासमती चावल की ब्रांड छवि को नुकसान के जोखिम का हवाला देते हुए राज्य से तत्काल हस्तक्षेप करने की अपील की। पंजाब में बासमती चावल पर इस्तेमाल के लिए प्रतिबंधित कीटनाशकों में इस 60–दिवसीय अवधि के लिए एसीफेट, बुप्रोफेजिन, क्लोरपाइरीफोस, प्रोपिकोनाजोल, थियामेथोक्सम, प्रोफेनोफोस, कार्बेन्डाजिम, ट्राइसाइक्लाजोल, टेबुकोनाजोल, कार्बोफ्यूरान और इमिडाक्लोप्रिड जैसे आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले फॉर्मूलेशन शामिल हैं। ये रसायन, हालांकि अतीत में व्यापक रूप से इस्तेमाल किए गए थे, अब बासमती चावल के सुरक्षित निर्यात और खपत के लिए संभावित बाधा के रूप में देखे जा रहे हैं।

कीटनाशक अधिनियम, 1968 की धारा 27 को लागू करते हुए, पंजाब के राज्यपाल ने इस प्रतिबंध को लागू करने के लिए वैधानिक शक्तियों का प्रयोग किया है। यह प्रतिबंध 1 अगस्त से 30 सितंबर, 2025 तक पूरे राज्य में लागू रहेगा। इस अवधि के दौरान, सूचीबद्ध कीटनाशकों के सभी फॉर्मूलेशन विशेष रूप से बासमती फसल पर प्रतिबंधित रहेंगे।

भारत का खाद्यान्न उत्पादन 106 लाख टन बढ़कर 1,663.91 लाख टन पहुंचा– शिवराज सिंह चौहान

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि वित्त वर्ष 2024–25 में भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन पिछले वर्ष के उत्पादन से 106 लाख टन बढ़कर 1,663.91 लाख टन हो गया है।

चौहान ने राष्ट्रीय राजधानी में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 2023–24 में कुल खाद्यान्न उत्पादन लगभग 15,57.6 लाख टन था। मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि 2024–25 में यह 16,63.91 लाख टन हो गया है। उन्होंने कहा कि 2023–24 में रबी का उत्पादन 1600.06 लाख टन था, जो अब 1645.27 लाख टन हो गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उनके मंत्रालय का विजन भारत को दुनिया की खाद्य टोकरी बनाना है। मंत्री ने कहा कि हमारा खाद्यान्न उत्पादन बढ़ रहा है...हम यहीं नहीं रुकना चाहते। हम अपने देश की जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं और दुनिया भर के कई देशों की मदद भी करना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य एक दिन भारत को दुनिया की खाद्यान्न टोकरी बनाना है।

कृषि उत्पादन बढ़ाने पर जोर देते हुए चौहान ने कहा कि शुद्ध और रोगमुक्त नर्सरी सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छ पौध कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले बीज, मिट्टी की जांच और उत्पादन लागत में कमी की जरूरत समझनी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि देश भर में आईसीएआर के 113 संस्थान हैं, जिनमें से 11 महाराष्ट्र में हैं। उन्होंने घोषणा की कि महाराष्ट्र में कृषि विकास की रूपरेखा तैयार करने के लिए नागपुर में राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (एनबीएसएस और एलयूपी) में सभी आईसीएआर संस्थानों के प्रमुखों के साथ बैठक आयोजित की जाएगी। सरकार प्रयोगशालाओं और खेतों के बीच की खाई को पाटने के लिए प्रतिबद्ध है।

SEEDS OF SUCCESS

SOMANI SEEDZ®

HYB RADISH-CROSS X-35

HYB CABBAGE TEZ (IMP)

HYB TOMATO ANMOL

HYB BITTER GOURD SKS-2543

Farmers First Choice

SOMANI KANAK SEEDZ PVT. LTD.

HEAD OFFICE: C-91/7, 2nd FLOOR, WAZIRPUR INDUSTRIAL AREA, NEW DELHI - 110052, PHONE: (+91) 47505226, 47503925, 47053925, 8587987987, EMAIL: CONTACT@SOMANISEEDZ.COM, WEBSITE: WWW.SOMANISEEDZ.COM

मौसम पूर्वानुमान के आधार पर रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन की उम्मीद– शिवराज सिंह चौहान

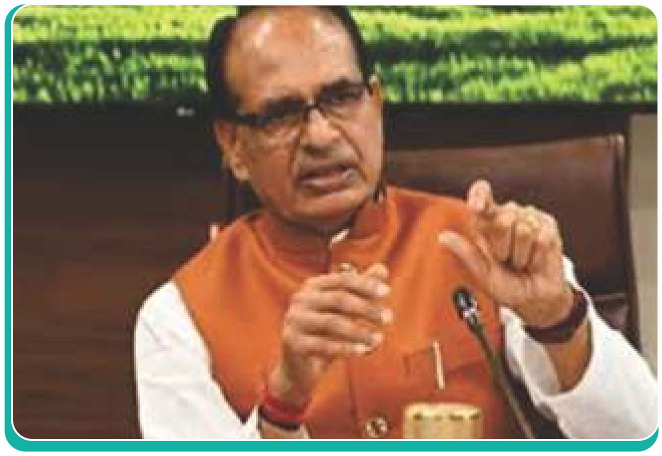

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि अगले महीने से शुरू होने वाले 2025–26 खरीफ सीजन के दौरान भारत खाद्यान्न उत्पादन में नया रिकॉर्ड हासिल कर सकता है, क्योंकि इस बार मानसून की बारिश सामान्य से अधिक रहने का अनुमान है। चौहान ने नकली और घटिया कीटनाशकों की बिक्री पर अंकुश लगाने के लिए कड़े कानून बनाने और संतुलित उर्वरक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड के बेहतर क्रियान्वयन की भी मांग की। देश भर में 15 दिवसीय राष्ट्रव्यापी विकसित कृषि अभियान (विकसित कृषि अभियान) का नेतृत्व कर रहे मंत्री ने कहा कि खरीफ बुवाई से पहले आउटरीच कार्यक्रम कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नीतियों और अनुसंधान योजनाओं को परिष्कृत करने में मदद करेगा। कृषि मंत्रालय के तीसरे अनुमान के अनुसार, 2024–25 खरीफ सीजन में भारत का खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 168.06 मिलियन टन तक पहुंच गया। 2014–15 से खरीफ खाद्यान्न उत्पादन में 31.23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

चौहान ने कहा कि चल रहे अभियान से खरीफ सीजन में कृषि उत्पादन को और बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि हम किसानों की चिंताओं को दूर करने और उन्हें नई तकनीकों और प्रथाओं के बारे में शिक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि अब तक 10 राज्यों की यात्रा के दौरान उन्हें किसानों से पता चला है कि कुछ क्षेत्रों में मौजूदा फसल किस्मों ने उभरते कीटों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है। किसानों ने नकली कीटनाशकों के बारे में भी चिंता जताई और कीमतों में गिरावट के दौरान अधिक सुरक्षा की मांग की। उन्होंने कहा कि इन इनपुट के आधार पर लघु, मध्यम और दीर्घकालिक कार्यान्वयन के लिए अनुसंधान योजनाएं और नीतियां विकसित की जाएंगी। चौहान ने कहा कि इन प्रयासों और संभावित अच्छे मानसून के साथ, 2025–26 में खरीफ खाद्यान्न उत्पादन में नया रिकॉर्ड हासिल करने में मदद मिलेगी। धान जैसी खरीफ फसलों की बुवाई जुलाई में दक्षिण–पश्चिम मानसून की शुरुआत के साथ शुरू होती है। इस साल मानसून की बारिश सामान्य रहने का अनुमान है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान'– किसानों के लिए वैज्ञानिक समाधान'

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार, विकसित कृषि संकल्प अभियान–2025 का क्रियान्वयन 29 मई से 12 जून, 2025 से देशभर में किया गया। इस अभियान का उद्देश्य देश भर के गांवों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि की नवीनतम तकनीकों एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी को किसानों तक सीधा पहुंचाना एवं साथ ही आधुनिक तकनीकों से खरीफ फसल प्रबंधन और उत्पादकता वृद्धि के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। यह अभियान विकसित भारत के लिए विकसित खेती व किसानों को समृद्ध करने हेतु महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि इस अभियान में ''लैब टू लैंड'' विजन के साथ विज्ञान एवं वैज्ञानिक किसानों के खेत में पहुंचें। इस अभियान में 700 जिलों में 2000 से अधिक वैज्ञानिक दल ने 1.5 करोड़ से अधिक किसानों से सीधा संवाद स्थापित किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली एवं कृषि इकाई, विकास विभाग, दिल्ली सरकार ने विशेष अभियान चलाया। यह अभियान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के तीन प्रमुख जिले दक्षिण–पश्चिम जिला, उत्तर–पश्चिम जिला तथा उत्तरी जिला के विभिन्न गांवो के 40 जगहों पर चलाया गया, जिसमें लगभग 80 से अधिक गांवों की भागीदारी रही एवं 50,000 से अधिक किसानों का वैज्ञानिकों से सीधा संवाद स्थापित हुआ।

इस अभियान के दौरान, किसानों को आगामी खरीफ फसलों से सम्बंधित आधुनिक तकनीकों के की जानकारी के साथ मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार विभिन्न फसलों के चयन तथा संतुलित खादों के प्रयोग, प्राकृतिक खेती, पशुओं का रखरखाव, बागवानी एवं फलों की खेती के साथ साथ किसानों के लिए उपयोगी विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से योजनाओं एवं नवीनतम जानकारी साझा की गई एवं साथ में किसानों से फीडबैक लेना एवं उनके द्वारा किए गए नवाचार का भी डाक्यमेन्टेशन करने जैसे आदि कार्य शामिल किए गए।

इस अभियान हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली एवं कृषि इकाई, विकास विभाग, दिल्ली सरकार की टीम दिल्ली देहात के विभिन्न गांवों का दौरा करके किसानों को कार्यक्रम हेतु जागरुक किया एवं साथ ही युवा, प्रगतिशील किसानों, महिला किसानों से विकसित खेती व किसानों को समृद्ध करने हेतु इस महत्वपूर्ण अभियान में कदम से कदम बढ़ाने का आह्वान किया।

DEDICATED 1000 MT PLANT

ichiban
CROP SCIENCE LTD.
(Powered by Japanese Technology)

INDIA'S
FIRST TECHNICAL PLANT
TO MANUFACTURE ALL FIVE **STROBILURIN** GROUP FUNGICIDE

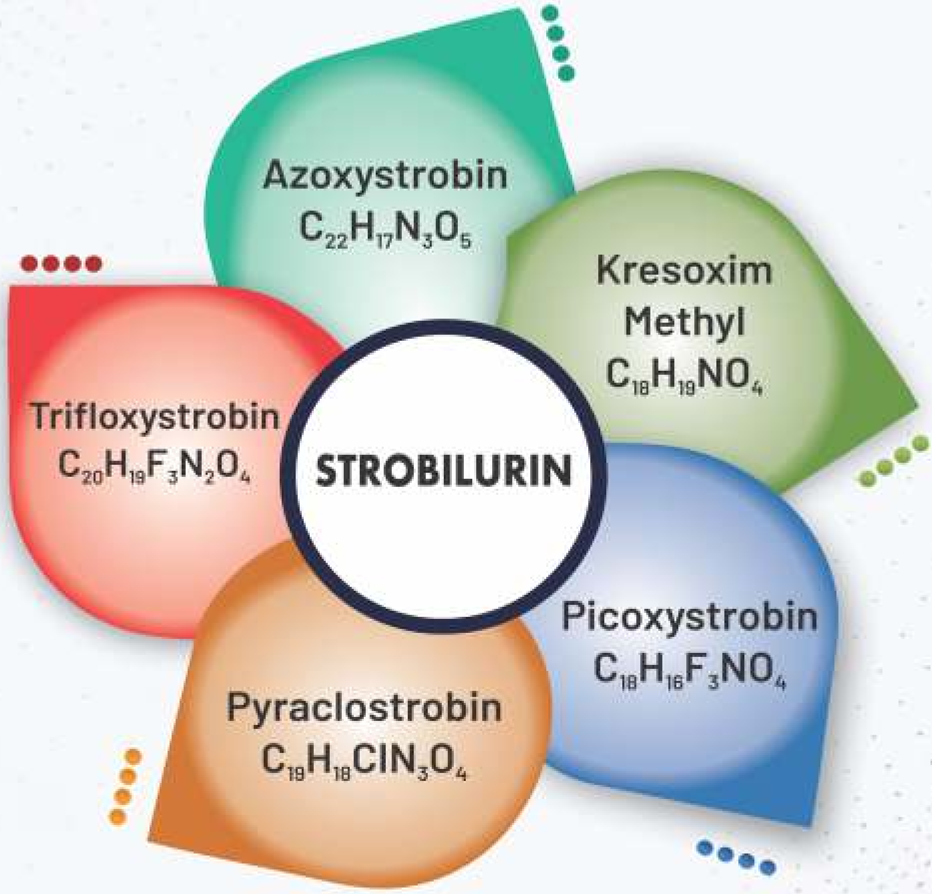

Ichiban Group proudly presents one of the best-in-class technical plants in the country equipped with the capability to manufacture all strobilurin fungicides along with the finest formulations. Our state-of-the-art facility underscores our commitment to delivering top-quality agricultural solutions ensuring superior protection and performance for your crops.

Ichiban Crop Science Ltd.

708-712, Best Sky Tower, Netaji Subhash Place, Pitampura, Delhi-110034

info@ichiban.net.in 011-45271800 (100 lines) www.ichiban.net.in

@ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop

राजधानी दिल्ली के किसानों से मिले केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान

कृषि क्षेत्र में नवाचार, तकनीकी हस्तांतरण और किसान–वैज्ञानिक संवाद को मजबूत करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा शुरू किया गया 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' अब अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है। इस 15 दिवसीय महा–अभियान के अंतर्गत देशभर के लाखों किसानों से सीधा संवाद स्थापित किया गया। 14वें दिन, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली के बाहरी इलाके में स्थित तिगिपुर गांव का दौरा किया, जहां उन्होंने किसानों से प्रत्यक्ष संवाद कर उनकी समस्याओं को जाना और समाधान के लिए सुझाव दिए। इस मौके पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट, वरिष्ठ वैज्ञानिकों और कृषि मंत्रालय के अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में यह संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक शोध, आधुनिक कृषि तकनीकों और सरकार की योजनाओं से जोड़ना है ताकि खेती को लाभकारी, टिकाऊ और भविष्य उन्मुख बनाया जा सके। कृषि मंत्री ने तिगिपुर में आयोजित किसान चौपाल में भाग लेते हुए स्थानीय किसानों से खुलकर बातचीत की। चौपाल के दौरान उन्होंने किसानों से बीज उत्पादन, पॉलीहाउस खेती, स्ट्रॉबेरी जैसी उच्च मूल्य की फसलों, और कृषि में नवाचार पर विस्तृत चर्चा की।

कृषि मंत्री ने ड्रोन तकनीक के माध्यम से कीटनाशक और पोषक तत्वों के छिड़काव का लाइव प्रदर्शन देखा। उन्होंने वैज्ञानिकों से इस तकनीक की लागत, प्रभावशीलता, और छोटे किसानों के लिए इसकी उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने नर्सरी क्षेत्र का पैदल दौरा भी किया, जहां पौध उत्पादन, उन्नत किस्मों की खेती और किसानों के साथ तकनीक के अनुप्रयोगों पर चर्चा की गई।

उन्होंने बताया कि इस अभियान के दौरान ICAR की 2,170 वैज्ञानिक टीमों ने देशभर में लगभग 1.08 करोड़ किसानों से प्रत्यक्ष संवाद कर उन्हें आधुनिक तकनीक और योजनाओं के बारे में जागरूक किया है। जहां तत्काल समाधान संभव था, वहां त्वरित कार्य किया गया है और अन्य विषयों पर गंभीर प्रयास जारी हैं।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार कृषि उत्पादन से लेकर विपणन तक हर स्तर पर किसानों को तकनीकी सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि अब दिल्ली के किसान भी केंद्र की सभी प्रमुख कृषि योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे। उन्होंने यह स्वीकार किया कि अब तक दिल्ली के किसान प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (PM-AASHA), मूल्य समर्थन योजना, मूल्य अंतर भरपाई योजना, बाजार हस्तक्षेप योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, परंपरागत कृषि विकास योजना, नए बाग लगाने एवं पुराने बागों के नवीनीकरण, नर्सरी विकास, कृषि यंत्र सब्सिडी, और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी अनेक योजनाओं से वंचित रहे हैं।

अब इस स्थिति में बदलाव लाया जाएगा। दिल्ली सरकार से इन योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रस्ताव मांगा गया है। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक कांटे और खाद की खरीद के लिए भी केंद्र सरकार सहायता प्रदान करेगी।

"बबलिन" मेरी आवाज सुनो
Saffire
GROW TOGETHER
आपकी फसलों को लाभदायक बना दूँगा
Saffire
GreenAg
Liquid Fertilizer
BUBLIN™
सही है
जबरदस्त उत्पादन
फसलों की गुणवत्ता में सुधार
पोषक तत्वों का बूस्टर
पैदावार में वृद्धि
आइये बढ़ें
सबके साथ, एक साथ

Saffire
GROW TOGETHER
अब फफूँद की खेत में
NO ENTRY
सही है
NO
ENTRY
Powered by Crystal
Azoxystrobin 11.5% + Mancozeb 30% WP
AAUSKAR™
ऑस्कर
Fungicide
AAUSKAR
Saffire
आइये बढ़ें
सबके साथ, एक साथ

मक्का की फसल के लिये महावीरा जिरोन पावर प्लस सर्वश्रेष्ठ खाद

नया तरीका, नई उमंग मेरी फसल बढ़ेगी महावीरा जिरोन पावर प्लस के संग

भारत वर्ष में मक्का की फसल का रकबा निरंतर बढ़ रहा है। गेहूं एवं धान के पश्चात मक्का तीसरी मुख्य फसल है। मक्का की उत्पादन क्षमता गेहूं एवं धान की अपेक्षा 25 से 100 प्रतिशत अधिक है। मक्का के लिये 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली उत्तम जल निकास की भूमि उपयुक्त रहती है। 2 से 3 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के पश्चात पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। खरीफ मौसम में मक्का की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय 15 से 30 जून है। मक्का की बुवाई देरी की स्थिति में 10 –15 जुलाई तक की जा सकती है।

मक्का की बुवाई के पहले दो से तीन टन सड़ी गोबर की खाद खेत में अवश्य मिलायें। बुवाई के समय चार बोरी यानि दो क्विंटल महावीरा जिरोन पावर प्लस खाद देने से मक्का का सर्वाधिक गुणवत्तापूर्ण उत्पादन पाया जा सकता है। 40 किलोग्राम पोटाश एवं 160 किलोग्राम यूरिया मक्का के लिये अनुशंसित है। यूरिया की मात्रा बुवाई के दौरान 40 किलोग्राम, 25 से 30 दिन की फसल पर 70 किलोग्राम एवं 45 से 50 दिन की फसल पर 50 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करना चाहिए।

मक्का के सर्वश्रेष्ठ उत्पादन के लिये 4 किलोग्राम सिमट्रॉन बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। 45 से 50 दिन की फसल पर आधा लीटर एमिट्रॉन जेड का छिड़काव पानी में मिलाकर करने से चमकदार दाने वाला मक्का लिया जा सकता है। बोरोन 20 प्रतिशत 45 से 50 दिन की खड़ी फसल में अवश्य प्रयोग करें। 25 से 30 दिन की फसल में 250 मिलीलीटर जिंटाविक फसल में नयी ताजगी एवं उमंग भरने का काम करता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ मक्का की बुवाई करने पर 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ मक्का का उत्पादन पाया जा सकता है।

क्यों जरुरी है मक्का में महावीरा जिरोन पावर प्लस?

महावीरा जिरोन पावर प्लस छः पोषक तत्वों कैल्शियम, सल्फर, फास्फोरस,जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है। फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, जिंक और बोरोन से असली फर्क दिखने लगता है।

मक्का की फसल में नवीन अंगों के निर्माण, पोटैशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करने में जिंक की प्रमुख भूमिका होती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध बोरोन मक्का के फूलों एवं भुट्टों को गिरने से बचाता है।

इसमें उपलब्ध फास्फोरस मक्का की जड़ों की वृद्धि के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ मक्का की बुवाई करने से मक्का का अधिकतम उत्पादन, बेहतर गुणवत्ता एवं उत्पादन लागत में बचत होती है। इसके अलावा इसके प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता बरकरार रहती है। पौधों में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा अनुशंसित महावीरा जिरोन पावर प्लस मक्का के लिये सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। आर. एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स का महावीरा जिरोन पावर प्लस कंपनी के अधिकृत विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्निशियम	0.5 प्रतिशत

INDORAMA 50 Years

PARAS

शक्तिमान

OVER 38 YEARS OF TRUST

Leadership through Complete Agri Solutions

इंडोरामा प्रीमियम फसल सुरक्षा

टेम्बोकॉर्न

टेम्बोकॉर्न द्वारा मक्के की फसल में उगने वाले खरपतवारों का अत्यंत प्रभावशाली रोकथाम

- मक्के में खरपतवारों का बेहतर नियंत्रण
- शीघ्रता से कार्य करता है
- लम्बे समय तक प्रयोग

शक्ति फरटागो

शक्ति फरटागो का वादा, फसल हो सुरक्षित, उपज मिले ज्यादा

- कीटों पर प्रभावी नियंत्रण
- लम्बे समय तक फसल को कीटों से सुरक्षित रखता है
- फसलों को हरा भरा रखता है

शक्ति ट्राईकिल

धान के खरपतवारों पर अब त्रिकोणीय प्रहार

- धान के सभी खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण
- दानेदार होने के कारण प्रयोग में आसान
- खरपतवार उगने (2–3 पत्ती की अवस्था) के बाद प्रयोग करने पर बेहतर नियंत्रण

www.indorama.in | 18000 180 5244 (Toll Free)

ACE ट्रैक्टर ने भोपाल और रायपुर में डीलर मीट का आयोजन किया

देश की अग्रणी ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी निर्माता कंपनी ACE Ltd- (Action Construction Equipment Ltd.) ने हाल ही में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल और छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में एक भव्य डीलर मीट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल ACE परिवार के सदस्यों को एक साथ लाना था, बल्कि भविष्य की योजनाओं, तकनीकी उन्नति और ग्राहक सेवा को लेकर संवाद को और भी मजबूत करना था।

इस विशेष अवसर पर ACE के वरिष्ठ अधिकारियों और रीजनल टीम ने डीलर्स के साथ प्रत्यक्ष संवाद किया। उन्होंने कंपनी की आगामी योजनाओं, नए उत्पादों, तकनीकी नवाचारों और बाजार रणनीतियों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। डीलर मीट के दौरान डीलर्स ने भी अपने सुझाव, अनुभव और बाजार की जमीनी जरूरतों को खुलकर साझा किया। यह संवाद ACE के ''सुनो, समझो और साथ चलो'' दृष्टिकोण को और सशक्त करता है।

कार्यक्रम में ACE के हाल ही में लॉन्च किए गए ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी रेंज को भी प्रदर्शित किया गया, जिससे डीलर्स को उनके फीचर्स और कार्यक्षमता को नजदीक से समझने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम में मुख्य फाइनेंस पार्टनर्स चोला फाइनेंस, ACE बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक की प्रमुख पालिसी को एक्सप्लेन किया गया ताकि किसानो तक बेहतरीन प्रोडक्ट्स, व् शल सर्विसेज, कम इंटरेस्ट दर पर पहुंचाया जा सकें। सभी बिजनेस पार्टनर्स पूर्ण रूप से मोटिवेटेड थे और क्वार्टर–1 के बिजनेस प्लान का सत्यापन किया।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले डीलर्स का सम्मान समारोह, जिसमें उन्हें उनकी मेहनत और समर्पण के लिए ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

Samta Kisan Helpline :
1800 891 9477

gencrest
GENCREST BIO PRODUCTS PVT. LTD.
INFO@GENCREST.COM
www.gencrest.com

आईसीआरआईएसएटी, इफको और बीबीएसएसएल ने बीज अनुसंधान केंद्र स्थापित करने के लिए हाथ मिलाया

अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीआरआईएसएटी), भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको) और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (बीबीएसएसएल) ने औपचारिक रूप से एक त्रिपक्षीय सेवा समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत गुजरात, भारत में बीज अनुसंधान केंद्र की स्थापना की जाएगी, जो बीज नवाचार और टिकाऊ कृषि को आगे बढ़ाने पर केंद्रित एक अत्याधुनिक अनुसंधान केंद्र है।

इस समझौते के तहत, आईसीआरआईएसएटी को केंद्र के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट विकसित करने के लिए जिम्मेदार ज्ञान भागीदार के रूप में नियुक्त किया गया है। यह साझेदारी ICRISAT के स्थापना दिवस समारोह के दौरान आईसीआरआईएसएटी और इफको के बीच हाल ही में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन पर आधारित है, जो कृषि नवाचार और बीज अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए सभी पक्षों के साझा दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है। इफको द्वारा निर्मित और बीबीएसएसएल द्वारा संचालित किए जाने वाले बीज अनुसंधान केंद्र (BAK) का उद्देश्य विश्व स्तरीय बीज अनुसंधान और विकास अवसंरचना के एकीकरण के माध्यम से सतत कृषि विकास को बढ़ावा देना है। ज्ञान भागीदार के रूप में अपनी भूमिका में, आईसीआरआईएसएटी केंद्र की विशिष्टताओं, मुख्य कार्यों और डिजाइन ढांचे को परिभाषित करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करेगा।

आईसीआरआईएसएटी के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने कहा कि बीज अनुसंधान केंद्र विज्ञान, सहयोग और जमीनी स्तर की कार्रवाई के अभिसरण का प्रतिनिधित्व करता है। एक ज्ञान भागीदार के रूप में, आईसीआरआईएसएटी एक विश्व स्तरीय खाका देने के लिए प्रतिबद्ध है जो इस केंद्र को बीज नवाचार और किसान सशक्तिकरण का केंद्र बनने में सक्षम बनाएगा। बीबीएसएसएल के अध्यक्ष और इफको के विपणन निदेशक योगेंद्र कुमार ने कहा कि हमें आईसीआरआईएसएटी और बीबीएसएसएल के साथ इस साझेदारी पर गर्व है, जो एक शोध सुविधा के लिए आधार तैयार कर रही है, जो वैज्ञानिक कठोरता और नवाचार के माध्यम से भारत के किसानों की सेवा करेगी। इफको सतत और सहयोगी प्रयासों के माध्यम से कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इंसेक्टिसाइड्स इंडिया लिमिटेड ने धान किसानों के लिए नया हर्बिसाइड अल्टेयर लॉन्च किया

भारत के फसल संरक्षण और पोषण उद्योग में अग्रणी कंपनी इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड (आईआईएल) ने धान के लिए पेटेंट प्राप्त प्री–इमर्जेंट हर्बिसाइड अल्टेयर की लॉन्चिंग की। अल्टेयर को निसान केमिकल कॉर्पोरेशन, जापान द्वारा विकसित किया गया है और भारत में इसका विपणन विशेष रूप से आईआईएल द्वारा किया जाएगा। अल्टेयर भारतीय किसानों को विश्व स्तरीय समाधान लाने की आईआईएल की प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इन्सेक्टिसाइड्स (इंडिया) लिमिटेड और निसान केमिकल कॉर्पोरेशन, जापान, जो कृषि नवाचार में वैश्विक नेता है, के बीच यह रणनीतिक साझेदारी 2013 से भारतीय खेतों में अत्याधुनिक जापानी तकनीक लाती है। लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए, इन्सेक्टिसाइड्स (इंडिया) लिमिटेड के प्रबंध निदेशक राजेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि हमें भारत में अपने साझेदार निसान के एक और उत्पाद अल्टेयर को पेश करते हुए खुशी हो रही है। धान के लिए एक सफल प्री–इमर्जेंट हर्बिसाइड जो धान में अधिकांश खरपतवारों के अंकुरण को रोकता है। हमें विश्वास है कि अल्टेयर पूरे देश में धान उत्पादकों के लिए एक अपरिहार्य उपकरण बन जाएगा। इस लॉन्च के साथ, आईआईएल का लक्ष्य फसल सुरक्षा खंड में एक नेता के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करना और भारत के कृषक समुदाय की समृद्धि में योगदान देना है।

निसान केमिकल कॉर्पोरेशन का पेटेंटेड इनोवेशन अल्टेयर, चावल शाकनाशी तकनीक में एक बड़ी प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे आठ साल के समर्पित शोध के बाद विकसित किया गया है। भारतीय चावल की खेती प्रणालियों में लगातार खरपतवार की चुनौतियों से निपटने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया, अल्टेयर प्री–इमर्जेंट शाकनाशी समाधानों में एक नया मानक स्थापित करता है। पारंपरिक शाकनाशियों के विपरीत, अल्टेयर आवेदन के पहले दिन से ही मिट्टी में एक सुरक्षात्मक अवरोध बनाता है। इसे रोपाई के 0–3 दिनों के भीतर लगाया जाना चाहिए। यह प्रारंभिक हस्तक्षेप लंबे समय तक खरपतवारों के उभरने को रोकता है – 40–50 दिनों तक – महत्वपूर्ण प्रारंभिक विकास चरणों के दौरान स्थायी सुरक्षा प्रदान करता है।

44
FRUITFUL YEARS OF RICH LEGACY
Navbharat
Farmers First!
GCH-4
KOHINOOR
NBCH 22
HYBRID CASTOR
NBCH-22
NAVBHARAT GOLD BG II
NB GOLD
DEPARTMENT OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH, GOVT. OF INDIA
DSIR
RECOGNIZED
RECOGNITION FOR IN-HOUSE R&D
ISO 9001:2015
CERTIFIED
GLORY BG II
GLORY
GAURI
NB-4006
YAYATI
RAJA
NB111
NB-111
EVEREST
Hybrid Chilli ULTIMATE
Hybrid Chilli RANI
Hybrid Chilli PALLAVI
Hybrid Chilli KRATOS
ULTIMATE
RANI
PALLAVI
KRATOS
Navbharat SEEDS PVT. LTD.
8-2-293/82/A-714 & 714/1, 3rd Floor, Silver Square,
Opp. Croma Show Room, Road No.36, Jubilee Hills, Hyderabad - 33.

इफको ने ग्रामीण किसानों को सशक्त बनाने के लिए एफडीआरवीसी के साथ समझौता किया

दुनिया की सबसे बड़ी प्रसंस्कृत उर्वरक सहकारी संस्था और कृषि–इनपुट में वैश्विक अग्रणी भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको) ने ग्रामीण मूल्य श्रृंखला विकास फाउंडेशन (एफडीआरवीसी) के साथ एक रणनीतिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह ऐतिहासिक साझेदारी 800 से अधिक किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के लिए अभिनव और टिकाऊ कृषि इनपुट तक पहुंच बढ़ाने के लिए तैयार है, जिससे अंततः पूरे भारत में 10 लाख से अधिक किसानों को लाभ होगा। इफको के विपणन निदेशक योगेंद्र कुमार और एफडीआरवीसी के सीईओ बिपिन बिहारी ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस सहयोग के तहत, इफको नैनो उर्वरकों, जैव–उत्तेजक, विशेष उर्वरकों और जैव–उर्वरकों और जैव–अपघटकों सहित जैविक उत्पादों की अपनी नवीनतम श्रृंखला की आपूर्ति करेगा।

यह पहल सामूहिक खेती के माध्यम से टिकाऊ, जलवायु–स्मार्ट कृषि को बढ़ावा देने के भारत सरकार के व्यापक मिशन का समर्थन करती है। एफडीआरवीसी के व्यापक जमीनी नेटवर्क का लाभ उठाकर, साझेदारी का उद्देश्य इन उच्च–गुणवत्ता वाले इनपुट को सबसे दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुँचाना है।

इफको की भागीदारी अत्याधुनिक तकनीक और किसान–प्रथम समाधानों के माध्यम से भारतीय कृषि को बदलने के लिए इसकी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

सहयोग एफपीओ की संस्थागत क्षमता के निर्माण की दिशा में भी तैयार किया गया है, जिससे उन्हें आत्मनिर्भर ग्रामीण उद्यमों के रूप में विकसित होने में सक्षम बनाया जा सके। यह न केवल छोटे और सीमांत किसानों को बेहतर संसाधनों के साथ सशक्त बनाएगा, बल्कि उन्हें मूल्य श्रृंखलाओं में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेने में भी मदद करेगा।

एजीईगल ने भारत के कृषि भविष्य की सेवा के लिए व्योम ड्रोन के साथ रणनीतिक गठबंधन किया

सैन्य, सार्वजनिक सुरक्षा और वाणिज्यिक उपयोग के लिए सर्वश्रेष्ठ मानव रहित हवाई प्रणाली (यूएएस) और सेंसर की अग्रणी प्रदाता एजीईगल एरियल सिस्टम्स इंक. भारत के व्योम ड्रोन्स के साथ एक रणनीतिक गठबंधन में प्रवेश कर रही है। इस रणनीतिक गठबंधन के तहत, एजीईगल एरियल सिस्टम्स भारत में ग्राहकों को एजीईगल ईबी एक्स ड्रोन बनाने और बेचने के लिए व्योम ड्रोन्स को लाइसेंस देने का इरादा रखती है। एजीईगल समझौते के हिस्से के रूप में व्योम को सेवा और रखरखाव प्रशिक्षण भी प्रदान करेगी। एजीईगल के सीईओ बिल इरबी ने कहा कि इस समझौते के माध्यम से व्योम ड्रोन्स के साथ काम करने से दुनिया के सबसे बड़े और सबसे गतिशील बाजारों में से एक में भारत के विशाल कृषि, नागरिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों की क्षमता को अनलॉक करने में मदद मिलती है।

345 मिलियन एकड़ से ज्यादा कृषि योग्य भूमि और सटीक कृषि की तेजी से बढ़ती मांग के साथ, भारत एजीईगल के लिए हमारे उन्नत eBee ड्रोन और मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर को तैनात करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है, जो किसानों को सर्वेक्षण क्षमता के साथ सशक्त बनाता है जो वास्तविक समय में, कार्रवाई योग्य जानकारी प्रदान करता है। व्योम ड्रोन ग्वालियर, मध्य प्रदेश में स्थित एक भारतीय ड्रोन कंपनी है, जो कृषि, निर्माण, सर्वेक्षण और बुनियादी ढांचे के निरीक्षण सहित विभिन्न उद्योगों में उन्नत ड्रोन समाधान प्रदान करने पर केंद्रित है। व्योम भारत के तेजी से बढ़ते ड्रोन इकोसिस्टम में एक सिद्ध और प्रभावशाली शक्ति है और इसने खुद को कई अनुप्रयोगों के लिए अनुकूलित उच्च गुणवत्ता वाले ड्रोन और सहायक उपकरण के प्रदाता के रूप में स्थापित किया है।

एजीईगल ड्रोन अपनी उन्नत सर्वेक्षण क्षमताओं के कारण भारत के कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, जो सटीक फसल निगरानी, मिट्टी विश्लेषण, जल प्रबंधन, कीट पहचान और उपज अनुमान लगाने में सक्षम हैं। भारत का कृषि ड्रोन बाजार 2030 तक 631 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जो सरकारी समर्थन और सर्वेक्षण क्षमता की बढ़ती मांग से प्रेरित है जो सटीक खेती और संसाधन प्रबंधन की जानकारी देता है।

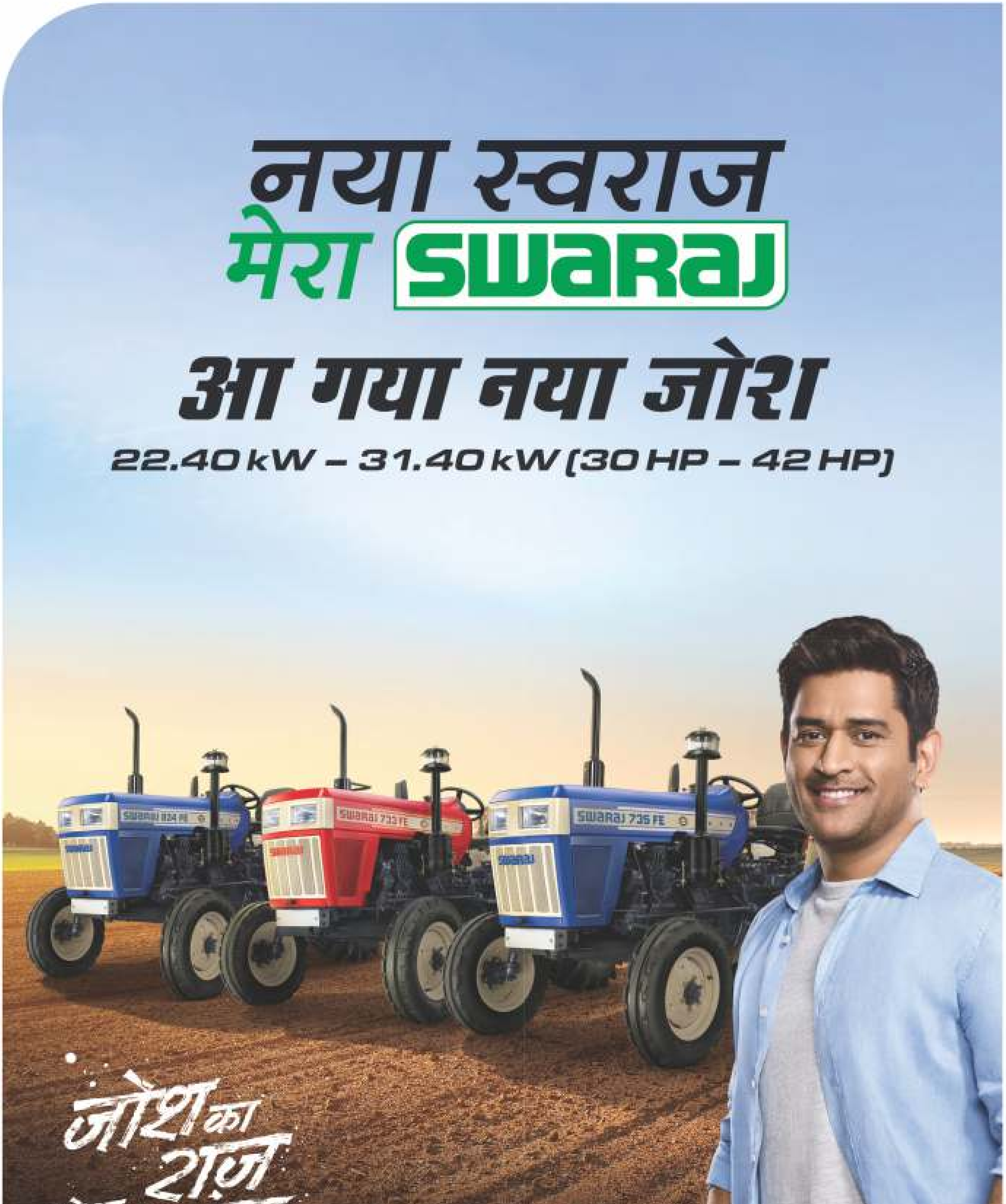
नया स्वराज
मेरा SWARAJ
आ गया नया जोश
22.40 kW – 31.40 kW (30 HP – 42 HP)
जोश का राज़ मेरा
SWARAJ

भारत का पहला ऑल–इन–वन कृषि ऐप एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट पेश हुआ

बेलगावी स्थित स्टार्ट–अप एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट प्राइवेट लिमिटेड ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) द्वारा संचालित भारत का पहला ऑल–इन–वन कृषि ऐप एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट पेश किया है। ऐप का उद्देश्य आधुनिक कृषि में आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए किसानों को वास्तविक समय, डेटा–संचालित समाधान प्रदान करके खेती में क्रांति लाना है।

सावियो परेरा और स्वाति परेरा द्वारा स्थापित, एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट को भारतीय किसानों द्वारा सामना की जाने वाली बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए बनाया गया था, जैसे कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, बाजार की कीमतों में उतार–चढ़ाव, कीटों का संक्रमण और सरकारी योजनाओं और आधुनिक कृषि उपकरणों तक पहुँचने में कठिनाई इत्यादि।

डिजिटल–फर्स्ट दृष्टिकोण के साथ, एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट ऐप क्षेत्र–विशिष्ट समाधान प्रदान करने के लिए एआई, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और विशेषज्ञ कृषि सलाहकार सेवाओं का लाभ उठाता है। यह किसानों को फसल प्रबंधन से लेकर कीट नियंत्रण तक हर चीज के बारे में मार्गदर्शन करता है, यह सुनिश्चित करता है कि उनके पास सही उपकरण हों। एक अंतर्निहित चौटबॉट 24x7 बहुभाषी सहायता प्रदान करता है, यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी तक निरंतर पहुँच हो।

ऐप के भीतर एआई और आईओटी का एकीकरण किसानों को व्यक्तिगत सलाह प्राप्त करने, अपनी फसलों के स्वास्थ्य की निगरानी करने और अपनी कृषि पद्धतियों को अनुकूलित करने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, एसबीओएफ एग्रोस्मार्ट सरकारी योजनाओं और सब्सिडी को नेविगेट करने की प्रक्रिया को सरल बनाता है, जिससे किसानों की वित्तीय सहायता और आवश्यक संसाधनों तक पहुँच बढ़ती है।

ऐप को आधिकारिक तौर पर बेलगावी में पीडब्ल्यूडी मंत्री सतीश जरकीहोली द्वारा लॉन्च किया गया, जिसमें विधायक आसिफ (राजू) सैत, बीयूडीए के अध्यक्ष लक्ष्मणराव चिंगले और डीसीसी बैंक के अध्यक्ष अप्पासाहेब कुलगोड़े सहित प्रमुख स्थानीय हस्तियाँ उपस्थित थीं।

क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड ने धान के लिए राइसएक्ट शाकनाशी और कपास के लिए जिवोरा कीटनाशक लॉन्च किया

भारत की अग्रणी कृषि–रसायन समाधान कंपनी क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड (सीसीपीएल) ने दो प्रमुख शोध–संचालित शाकनाशी और कीटनाशकों को लॉन्च किया। जो विशेष रूप से चावल की खेती के लिए तैयार एक क्रांतिकारी समाधान है और जिवोरा, कपास में चूसने वाले कीटों की बढ़ती चुनौतियों का समाधान करने के लिए डिजाइन किया गया एक अगली पीढ़ी का कीटनाशक है। इन दो उत्पादों के लॉन्च के साथ, क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन को अपने शाकनाशी पोर्टफोलियो में 8 प्रतिशत और अपने कीटनाशक पोर्टफोलियो में 7 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद है। अपने लॉन्च के एक हिस्से के रूप में, क्रिस्टल महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिम बंगाल के प्रमुख बाजारों में राइसएक्ट और जिवोरा दोनों को पेश करेगा।

राइसएक्ट प्रारंभिक खरपतवार नियंत्रण सुनिश्चित करता है और पूरे मौसम में अवशिष्ट नियंत्रण प्रदान करता है। जबकि ट्रायफामोन खरपतवार की जड़ों और पत्तियों के माध्यम से कार्य करता है और महत्वपूर्ण एंजाइम गतिविधि को रोकता है, एथोक्सीसल्फ्यूरॉन पत्तियों के माध्यम से अवशोषित होता है और प्रणालीगत क्रिया के माध्यम से खरपतवार के विकास को बाधित करता है।

एक बार पेश किए जाने के बाद, राइसएक्ट से लगभग 3 लाख एकड़ धान को कवर करने और प्रमुख बाजारों में 2.5 से 3 लाख से अधिक प्रगतिशील धान किसानों से सीधे जुड़ने की उम्मीद है, जिससे क्रिस्टल का बाजार हिस्सा बढ़ जाएगा।

जिवोरा दो कुशल सक्रिय अवयवों का एक अनूठा संयोजन है, जो संपर्क, प्रणालीगत और ट्रांसलेमिनर क्रिया प्रदान करता है, जो व्हाइटफ्लाइज, जैसिड्स और एफिड्स के खिलाफ प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

HYTECH
Assuring The Best
हाईटेक बाजरा
HT 4252
बाजरे का बादशाह,
उपज में है।
नंबर 1
हाईटेक
4252
HYTECH
Assuring The Best
HT 4252
HYBRID
BAJRA
SEED
हाईटेक सीड इंडिया प्रा.लि.हैदराबाद

बेयर ने भारत में धान की खेती में स्टेम बोरर्स के प्रबंधन के लिए बिकोटा लॉन्च किया

कृषि और स्वास्थ्य सेवा के जीवन विज्ञान क्षेत्रों में प्रमुख दक्षताओं वाला वैश्विक उद्यम बायर ने बिकोटा के लॉन्च की घोषणा की है, जो चावल के किसानों को स्टेम बोरर कीटों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया एक नया उत्पाद है। बिकोटा इन हानिकारक कीटों के खिलाफ मजबूत सुरक्षा प्रदान करने के लिए बायर के अनन्य नवाचार को जोड़ता है। बिकोटा जून 2025 से पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, पश्चिमी यूपी, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना सहित प्रमुख चावल उगाने वाले राज्यों में उपलब्ध होगा।

स्टेम बोरर चावल की फसलों को काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे पैदावार कम हो सकती है। बिकोटा इन कीटों को खाने से रोकने के लिए तेजी से काम करता है और लंबे समय तक सुरक्षा प्रदान करता है। सिर्फ एक बार लगाने से, किसान बाजार में उपलब्ध अन्य समाधानों की तुलना में लंबी अवधि के लिए अतिरिक्त सुरक्षा का आनंद ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यह बेहतर जड़ और टिलर विकास को बढ़ावा देता है, जिससे समग्र फसल स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद मिलती है और अधिक पैदावार सुनिश्चित करते हुए मौसम की बदलती परिस्थितियों के बीच स्टेम बोरर संक्रमण को नियंत्रित करने की प्रमुख चुनौती का समाधान होता है।

लॉन्च पर बोलते हुए, बेयर के फसल विज्ञान प्रभाग के भारत के मुख्य परिचालन अधिकारी, मोहन बाबू ने कहा कि बेयर अपने नवाचारों के माध्यम से किसानों के जीवन को आसान बनाने का प्रयास करता है। बिकोटा के साथ, हम न केवल धान के किसानों को ऐसे समाधान देना चाहते हैं जो उनकी फसल की रक्षा करेंगे बल्कि उनका समय और श्रम लागत भी बचाएंगे और उनकी उपज और आय में सुधार करने में मदद करेंगे। इसका दानेदार सूत्रीकरण सुविधाजनक अनुप्रयोग की अनुमति देता है, जिससे किसानों के लिए अपने खेतों को जल्दी से कवर करना आसान हो जाता है।

सेफेक्स केमिकल्स ने गुजरात के भरूच में नई अत्याधुनिक सुविधा के साथ विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार किया

स्पेशलिटी केमिकल सेक्टर की अग्रणी कंपनी सेफेक्स केमिकल्स ने गुजरात के भरूच में अपनी सबसे नई और सबसे बड़ी विनिर्माण सुविधा में परिचालन शुरू करने की घोषणा की है। अप्रैल 2025 में चालू होने वाली यह सुविधा कंपनी की चल रही विस्तार रणनीति में एक प्रमुख मील का पत्थर है और भारत के प्रमुख कृषि बाजारों में इसकी आपूर्ति श्रृंखला दक्षता और उत्पाद उपलब्धता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

भरूच सुविधा में लिक्विड और पाउडर फसल सुरक्षा फॉर्मूलेशन की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्माण किया जाएगा, जो भारत के प्रमुख कृषि क्षेत्रों से बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सेफेक्स की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा। लिक्विड उत्पादों के लिए 23,335 मीट्रिक टन की वर्तमान क्षमता और भारत में सुविधाओं में लिक्विड, पाउडर और कणिकाओं सहित कुल उत्पादन की 51,395 मीट्रिक टन क्षमता के साथ, नई क्षमता लिक्विड फॉर्मूलेशन के लिए प्रति दिन 30 मीट्रिक टन की प्रारंभिक उत्पादन क्षमता जोड़ेगी, जिसे प्रति दिन 80 मीट्रिक टन तक बढ़ाया जा सकता है। यह सुविधा कंपनी के संचालन के लिए खासकर पश्चिमी, मध्य और दक्षिणी भारत में एक प्रमुख केंद्र बनने के लिए तैयार है।

नई सुविधा के शुभारंभ पर बोलते हुए, सेफेक्स केमिकल्स के चेयरमैन एस के चौधरी ने कहा कि हमारी नई भरूच सुविधा सेफेक्स के किसानों को अभिनव फसल सुरक्षा समाधानों के साथ सशक्त बनाने के मिशन में एक महत्वपूर्ण कदम है। केंद्रीय रूप से स्थित, यह भारत के प्रमुख कृषि बाजारों में हमारी आपूर्ति श्रृंखला दक्षता और जवाबदेही को बढ़ाता है। यह सुविधा हमारे एग्रीटेक प्लेटफॉर्म, गोल्डन फार्म्स के लिए एक समर्पित विनिर्माण आधार के रूप में भी काम करेगी।

वैश्विक स्तर पर 1550 से अधिक कर्मचारियों के साथ, सेफेक्स कुल कर्मचारियों में लगभग 300 प्रत्यक्ष नौकरियां जोड़ेगा। कंपनी समग्र शिक्षा, बुनियादी सुविधाओं और खेलों पर केंद्रित परिवर्तनकारी परियोजनाओं के साथ अपने सीएसआर–नेतृत्व वाले जुड़ाव मॉडल के माध्यम से स्थानीय समुदाय के साथ मजबूत संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

रासायनिक खाद की कमी का असरदार समाधान!

अब रसायन नहीं, पोषण चाहिए!

डीएपी / यूरिया की कमी से परेशान किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प —

ज़ायटॉनिक® मिनी किट

ज़ायटॉनिक® नर्सरी किट

- फसल को संतुलित और सम्पूर्ण पोषण – बिना रासायनिक खाद के
- मिट्टी की संरचना में सुधार — नरम, हवादार मिट्टी और बेहतर अंकुरण
- पानी की बचत और जलधारण क्षमता में वृद्धि
- फसल की वृद्धि और रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार
- भूमि की उपजाऊ शक्ति बनाए रखे — मिट्टी को नुकसान से बचाएं

ज़ायटॉनिक तकनीक पर आधारित यह उत्पाद
केवल खाद का विकल्प नहीं, एक सम्पूर्ण समाधान हैं।

तो अब छोड़े चिंता

अपनाएं ज़ायटॉनिक, सुनिश्चित करें स्वस्थ मिट्टी, बेहतर उत्पादन और बढ़ता मुनाफा!

For Trade And Product Enquiries Contact At
info@zydexgroup.com | www.zydexgroup.com
Toll free : 1800-12300-7666

Follow us :

एशिया डॉन बायो–केयर ने देशभर में प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया

एशिया डॉन बायो–केयर, जो जैविक और प्राकृतिक खेती के लिए गुणवत्तापूर्ण ऑर्गेनिक इनपुट उत्पादों का निर्माण करती है, ने अप्रैल से जुलाई 2025 तक देशभर में प्रशिक्षण कार्यशालाओं और विक्रेता सम्मेलनों की श्रृंखला आयोजित की। इन आयोजनों का उद्देश्य किसानों को टिकाऊ खेती के लिए प्रशिक्षित करना, विक्रेताओं को उत्पादों की नई जानकारी देना, और कंपनी के नवाचारों को साझा करना रहा। गुजरात के सूरत में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण में कंपनी के अध्यक्ष बंसल जी ने बताया कि शुद्ध, पौष्टिक और विषमुक्त भोजन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने जोर दिया कि आत्मनिर्भर भारत का मार्ग आत्मनिर्भर कृषि से होकर गुजरता है। कंपनी के महाप्रबंधक प्रदीप कुमार सिंह ने फैक्ट्री विजिट के दौरान उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया और "लाइओफिलाइजेशन टेक्नोलॉजी" की विस्तृत जानकारी दी, जिससे उत्पादों की शेल्फ लाइफ दो वर्ष तक हो जाती है। प्रशिक्षक संजय श्रीवास्तव (30 वर्षों के जैविक खेती अनुभव के साथ) ने सजीव और विषरहित खेती में इन इनपुट्स के प्रयोग के तरीकों को समझाया। उन्होंने बताया कि कंपनी का कंसोर्सियम आधारित उत्पाद लागत में किफायती और प्रकृति के लिए पूर्णतः सुरक्षित है। अंत में टीम ने संकल्प लिया कि वे किसानों तक सही जानकारी पहुंचाने के लिए गांवों में कार्यशालाएं करेंगे और खेत पर प्रदर्शन देंगे। कंपनी ने फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में विक्रेता सम्मेलन, राजस्थान के पुष्कर में विक्रेता स्नेह मिलन, पश्चिम बंगाल के दीघा में विक्रेता सम्मेलन और गुजरात के सूरत में दो दिवसीय विक्रेता प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस भव्य सम्मेलन में 125 विक्रेताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत कंपनी के प्रतिनिधि रितेश कुमार ने की। नई पैकिंग के तहत "प्रोडक्ट वही, अंदाज नया" थीम के अंतर्गत उत्पादों का अनावरण किया गया। श्रेष्ठ विक्रेताओं को उनके योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया।

महाप्रबंधक प्रदीप कुमार सिंह ने कंपनी की यात्रा और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। एग्रोनॉमिस्ट संजय श्रीवास्तव ने उत्पादों के प्रयोग की तकनीक और प्रभाव को साझा किया। एशिया डॉन बायो–केयर द्वारा देशभर में आयोजित कार्यशालाएं और विक्रेता सम्मेलन जैविक कृषि के प्रचार–प्रसार और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की दिशा में ठोस प्रयास हैं। इन आयोजनों में किसान, विक्रेता और कंपनी अधिकारी मिलकर एक साझा लक्ष्य की ओर बढ़े–स्वस्थ समाज, स्वच्छ पर्यावरण और खुशहाल किसान। सभी प्रतिभागियों ने कंपनी के गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को समय पर किसानों तक पहुंचाने का संकल्प लिया और कार्यक्रम का समापन प्रेरक नारे से हुआ।

"स्वच्छ अनाज, स्वस्थ समाज, सुरक्षित पर्यावरण, खुशहाल किसान।"

BASF ने भारतीय चावल उत्पादकों के लिए वैलेक्सियो® कीटनाशक और मिबेल्या® कवकनाशक लॉन्च किया

BASF India ने अपने दो नवीनतम वैश्विक फसल सुरक्षा समाधान, वैलेक्सियो® कीटनाशक और मिबेल्या® कवकनाशी लॉन्च किए हैं, जो भारत की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल – चावल की सेवा करेंगे। इन दो नवाचारों की शुरूआत भारत के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एजेंडे का समर्थन करेगी। ये समाधान चावल उत्पादकों को अपने चावल की पैदावार बढ़ाने में मदद करेंगे क्योंकि वे चावल के प्रमुख कीट, चावल हॉपर को प्रबंधित करने और शीथ ब्लाइट कंट्रोल जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। BASF एग्रीकल्चरल सॉल्यूशंस में ग्लोबल स्ट्रेटेजिक मार्केटिंग एंड सस्टेनेबिलिटी के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट मार्को ग्रोज्डानोविक कहते हैं ने कहा कि वैलेक्सियो® BASF का नवीनतम कीटनाशक है और यह न केवल एशिया प्रशांत क्षेत्र के चावल उत्पादकों के लिए, बल्कि इस क्षेत्र में चावल फसल प्रणाली के लिए हमारी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है। हम इसे भारत में सबसे पहले लॉन्च करने में सक्षम होने के लिए बहुत उत्साहित हैं क्योंकि हम जानते हैं कि चावल उत्पादकों को अपने कीट प्रबंधन का समर्थन करने के लिए नए रसायन की आवश्यकता है।

SIMON BARG, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, BASF कृषि समाधान, एशिया–प्रशांत ने कहा कि चावल न केवल भारत के लिए एक प्रमुख फसल है, बल्कि यह पूरे एशिया के लाखों किसानों के लिए है। मैं इस दिन को देखने में सक्षम होने के लिए उत्साहित और बहुत गर्वित हूं। BASF के दो नवीनतम नवाचार भारत में चावल उत्पादकों के लिए उपलब्ध हैं और यह मेरे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत भर में मेरे संवादों के दौरान किसान मुझसे पूछते थे कि 'आप मेरी उपज को सुरक्षित रखने या बढ़ाने में मेरी कैसे मदद कर सकते हैं? वैलेक्सियो® कीटनाशक और मिबेल्या® कवकनाशी के साथ, मेरी टीम और मैं यह सुनिश्चित करने के लिए बड़े पैमाने पर काम करेंगे कि चावल उत्पादकों को नवाचारों तक पहुंच मिल सके, क्योंकि मुझे पता है कि इनसे उन्हें इस वर्ष गुणवत्ता और पैदावार में सुधार करने में मदद मिलेगी।

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड ने दिनकर खरपतवारनाशक लॉन्च किया

भारत के कृषि रसायन उद्योग में अग्रणी धानुका एग्रीटेक लिमिटेड ने अपने नवीनतम सफल नवाचार – दिनकर का अनावरण किया, जो रोपे गए धान के लिए डिजाइन किया गया अगली पीढ़ी का शाकनाशी है। यह लॉन्च कंपनी की किसानों को अत्याधुनिक तकनीक और टिकाऊ फसल सुरक्षा समाधानों के साथ सशक्त बनाने की चल रही प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

इस कार्यक्रम में भारत और जापान के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्य अतिथियों में होक्को केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लिमिटेड, जापान के वरिष्ठ प्रबंध निदेशक शिनिची हयाकावा सैन और अंतर्राष्ट्रीय बिक्री प्रभाग के प्रबंधक कोहिची ओगिता सैन शामिल थे, जो नवाचार में धानुका के अंतर्राष्ट्रीय भागीदार हैं। लॉन्च में धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक राहुल धानुका का भी विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत किया गया, जिन्होंने भारतीय कृषि को बदलने के लिए ब्रांड के दृष्टिकोण को साझा किया। इस अवसर पर बोलते हुए, धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक राहुल धानुका ने कहा, दिनकर के साथ, हम भारतीय चावल उत्पादकों के लिए एक ऐसा उत्पाद लेकर आए हैं जो न केवल अभिनव है बल्कि चावल की खेती में उनके रोजमर्रा के संघर्षों के प्रति गहरी सहानुभूति रखता है।

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड में हर्बिसाइड्स के पोर्टफोलियो मैनेजर अमित मिश्रा ने कहा कि दिनकर को विशेष रूप से रोपे गए धान के लिए बनाया गया है। यह व्यापक–स्पेक्ट्रम और लंबी अवधि के खरपतवार नियंत्रण की सुविधा प्रदान करता है, जिससे खेतों की सफाई सुनिश्चित होती है और किसानों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। लॉन्च कार्यक्रम के दौरान, राजमुंदरी, आंध्र प्रदेश के एक प्रगतिशील किसान श्रीनिवास ने प्रतिनिधियों और चैनल भागीदारों के सामने दिनकर के साथ अपने अनुभव साझा किए। उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया ने धान के खेत में दिनकर के प्रदर्शन के बारे में प्रतिभागियों के आत्मविश्वास को काफी बढ़ाया। इस तरह की अभिनव गतिविधियाँ नवाचार के प्रति धानुका की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

बायोस्टैड ने धान के लिए नया पोस्ट–इमर्जेंट हर्बिसाइड 'प्यांकोर' लॉन्च किया

बायोस्टैड इंडिया लिमिटेड ने अपना नवीनतम नवाचार, 'प्यांकोर' लॉन्च किया है, जो धान के किसानों के लिए प्रभावी खरपतवार नियंत्रण प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई नई पीढ़ी की शाकनाशी है। आधिकारिक लॉन्च रायपुर, छत्तीसगढ़ में बायोस्टैड की वरिष्ठ नेतृत्व टीम, चौनल भागीदारों और दक्षिण कोरिया के एलजी केम लाइफ साइंसेज के अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों की उपस्थिति में हुआ।

'प्यांकोर' विशेष रूप से धान की फसलों के लिए पोस्ट–इमर्जेंट शाकनाशी के रूप में तैयार किया गया है। यह घास, सेज और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों सहित खरपतवारों की एक विस्तृत श्रृंखला के खिलाफ अत्यधिक प्रभावी है। उत्पाद को त्वरित कार्रवाई के लिए डिजाइन किया गया है – यह उपयोग के केवल 30 मिनट के भीतर खरपतवार की सतह में अवशोषित हो जाता है। खरपतवार की वृद्धि 24 घंटे के भीतर रुक जाती है, 3 से 5 दिनों में पीलापन शुरू हो जाता है, और उपयोग के 7 से 14 दिनों के भीतर पूर्ण खरपतवार नियंत्रण प्राप्त होता है।

पयांकोर की एक खासियत इसकी वर्षारोधी क्षमता है, जो एक उच्च गुणवत्ता वाले एडजुवेंट की बदौलत खरपतवार की सतह पर समान रूप से फैलती है और बारिश के दौरान फॉर्मूलेशन को बहने से बचाती है। किसानों के लिए अनुशंसित खुराक 240 मिली प्रति एकड़ है, जो इसे प्रभावी और किफायती दोनों बनाती है।

कार्यक्रम के दौरान, बायोस्टैड इंडिया लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी निदेशक हुजेफा खोराकीवाला ने भारतीय किसानों को विश्व स्तरीय कृषि तकनीकें प्रदान करने के कंपनी के मिशन के बारे में बात की।

लॉन्च कार्यक्रम में बायोस्टैड के नेतृत्व के प्रमुख सदस्यों ने भाग लिया, जिनमें गोकुल दफले (कार्यकारी उपाध्यक्ष), संतोष राणे (जीएम, कीटनाशक), हनीफ सैय्यद (विकास प्रमुख), महेश सोनवाने (फील्ड और डिजिटल मार्केटिंग प्रमुख), चेतन खैरनार (वरिष्ठ उत्पाद प्रबंधक), प्रभात कुमार यादव (क्षेत्रीय प्रमुख), क्रांति तिवारी (क्षेत्रीय प्रबंधक), सूरज सिंह (फील्ड मार्केटिंग प्रबंधक) और प्रफुल राठौर (विकास टीम) शामिल थे।

बायोफ्यूल एक्सपो 2025: भारत में हरित ऊर्जा क्रांति की दिशा में एक और कदम

बायोफ्यूल एक्सपो 2025 का आयोजन इस वर्ष नॉएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में 5 से 7 जून तक भव्य रूप से किया किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी और सम्मेलन बायो डीजल, एथेनॉल, बायोगैस जैसे वैकल्पिक ईंधनों पर केंद्रित किया गया। यह एक्सपो बायोफ्यूल निर्माताओं, रिफाइनरी कंपनियों, संयंत्रों के उपकरण व मशीन निर्माताओं, और इससे जुड़ी सहायक इंडस्ट्रीज के लिए एक प्रमुख मंच बन गया है। इस बायोफ्यूल प्रदर्शनी में देश विदेश के सैकड़ों कंपनियों ने भाग लिया.बायोफ्यूल के साथ साथ इस प्रदर्शनी में पर्यावरण पर भी खासा ध्यान रखा गया।

बायोफ्यूल एक्सपो 2025 का मुख्य उद्देश्य भारत में जैविक ईंधन उद्योग के विकास और विस्तार को बढ़ावा देना है। यह मंच उद्योग से जुड़े सभी प्रमुख हितधारकों और खरीदारों को एक साथ लाकर नए व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराएगा।

एक्सपो में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बायोफ्यूल उद्योग में चल रहे प्रमुख अनुसंधानों पर ध्यान केन्द्रित करना है। इस एक्सपो में देश–विदेश की बायोफ्यूल क्षेत्र में काम करने वाली कंपनियों ने भाग लिया। भारत के कोने–कोने से बायोफ्यूल कंपनियां, स्टार्टअप्स और तकनीकी विशेषज्ञ इस आयोजन में शामिल हुए। एक्सपो के साथ–साथ एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें बायोफ्यूल क्षेत्र की चुनौतियों, तकनीकी प्रगति, सरकारी नीतियों और भविष्य की रणनीतियों पर गहन चर्चा की गई। यह सम्मेलन कंपनियों, वैज्ञानिकों, नीति–निर्माताओं और उद्योग विशेषज्ञों के लिए नेटवर्किंग और ज्ञान साझा करने का सुनहरा अवसर साबित हुआ।

इस मौके पर फसल क्रांति की टीम ने बायोफ्यूल एक्सपो में पहुंचकर यहाँ पर शामिल हुए प्रतिभागियों से बात की. भारत में बायोफ्यूल सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए यह एक्सपो एक महत्वपूर्ण पहल है। इससे न केवल देश की ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान होगा।

बायोफ्यूल एक्सपो 2025 न सिर्फ ऊर्जा उद्योग को नई दिशा दे रहा है, बल्कि यह भारत को वैकल्पिक ईंधनों के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की ओर एक ठोस प्रयास है। इस खास मौके पर आयोजकों ने सभी उद्यमियों, शोधकर्ताओं और नीति–निर्माताओं से अपील की वे इस हरित क्रांति का हिस्सा बनें और भारत को एक स्वच्छ और स्थायी ऊर्जा भविष्य की ओर अग्रसर करें।

पेप्सिको इंडिया ने यूपी, बिहार और पश्चिम बंगाल में मृदा परीक्षण केंद्र शुरू किए

टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने के लिए, पेप्सिको इंडिया ने उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में मिट्टी जांच केंद्र (मिट्टी जांच केंद्र) शुरू किए हैं। मिट्टी दीदी के नाम से जानी जाने वाली प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा संचालित ये केंद्र मिट्टी के स्वास्थ्य के बारे में वैज्ञानिक, डेटा–समर्थित जानकारी प्रदान करते हैं, जिससे किसानों को फसल और पोषक तत्व प्रबंधन पर सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है।

मिट्टी जांच केंद्रों की शुरुआत किसानों को उनकी मिट्टी के स्वास्थ्य के बारे में सटीक और कार्रवाई योग्य जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता से प्रेरित थी। इस पहल का उद्देश्य मिट्टी के पीएच, पोषक तत्व सामग्री और अन्य महत्वपूर्ण मापदंडों का विश्लेषण करके सटीक खेती के माध्यम से उत्पादकता में सुधार करना है।

इस पहल के बारे में बात करते हुए, पेप्सिको इंडिया के एग्रो डायरेक्टर अनुकूल जोशी ने कहा, मिट्टी जांच केंद्रों के साथ, हमारा लक्ष्य किसानों को वैज्ञानिक, डेटा–समर्थित जानकारी तक पहुँच प्रदान करना है, जो उन्हें बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है – चाहे वह सही पोषक तत्वों का चयन करना हो या संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना हो। यह पहल किसानों को सही उपकरण और ज्ञान के साथ समर्थन देने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता में एक कदम आगे है, और मिट्टी की चिट्ठी किसान और भूमि के बीच के रिश्ते की भावना को खूबसूरती से दर्शाती है।

किसानों के लिए 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का आयोजन सफल रहा- डॉ. डी. के. राणा

नई दिल्ली के उजवा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से राजधानी के किसानों के लिए 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के अंतर्गत एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में किसानों ने भाग लिया और कृषि क्षेत्र की नवीनतम तकनीकों, सरकारी योजनाओं और उन्नत खेती की विधियों की जानकारी प्राप्त की। कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा के प्रभारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. राणा ने 'फसल क्रांति' से विशेष बातचीत की। प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत के कुछ प्रमुख अंश....

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का उद्देश्य क्या था?

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का उद्देश्य किसानों तक वैज्ञानिक कृषि तकनीकों की जानकारी पहुँचाना है, जिससे वे अपने खेतों की उत्पादकता को बढ़ा सकें और समय पर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें।

इस अभियान के तहत किसानों को किस तरह की जानकारी दी गई?

इस अभियान के तहत किसानों को केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न कृषि कल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। उन्हें यह बताया गया कि वे इन योजनाओं का लाभ किस तरह से आवेदन कर और उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम की एक खास बात यह रही कि इसमें किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित हुआ। इस संवाद के दौरान किसानों ने अपनी फसलों से जुड़ी समस्याएँ साझा कीं, जिनमें से कई समस्याओं का समाधान मौके पर ही किया गया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को किस तरह की जानकारी दी गई?

इस अभियान के तहत किसानों को प्राकृतिक खेती के फायदों के बारे में विशेष जानकारी दी गई। वैज्ञानिकों ने बताया कि रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से भूमि की उर्वरता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जबकि प्राकृतिक खेती से भूमि की सेहत सुधरती है और उत्पादन में स्थायित्व आता है। इसके अलावा कार्यक्रम में किसानों को मशरूम उत्पादन, फल एवं सब्जी की खेती, और विशेष रूप से स्ट्रॉबेरी जैसी नगदी फसलों की खेती के बारे में भी मार्गदर्शन दिया गया। दिल्ली जैसे शहरी क्षेत्रों में भी स्ट्रॉबेरी की सफल खेती की संभावनाओं पर चर्चा की गई, जिससे किसानों को अधिक लाभ मिल सकता है।

कृषि विज्ञान केंद्र उजवा किसानों को किस तरह से प्रशिक्षित कर रहा है?

कृषि विज्ञान केंद्र उजवा लगातार किसानों के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि क्षेत्र में कृषि नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके। हमारा उद्देश्य सिर्फ खेती की उपज बढ़ाना नहीं है, बल्कि किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में ठोस प्रयास करना है। हम किसानों को लगातार उनकी उपज व आय बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करते रहते हैं।

आपके दृष्टिकोण से यह कार्यक्रम कितना कारगर रहा?

मेरे दृष्टिकोण से यह कार्यक्रम बहुत ही कारगर रहा। दिल्ली में आयोजित यह कार्यक्रम किसानों के लिए ज्ञानवर्धक और समस्याओं के समाधान का एक प्रभावी मंच साबित हुआ। इस प्रकार के आयोजनों से किसानों को न केवल तकनीकी जानकारी मिलती है, बल्कि वे नई संभावनाओं को पहचानकर अपने कृषि व्यवसाय को नई दिशा भी दे सकते हैं। मुझे उम्मीद ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि इस कार्यक्रम में भाग लेने के बाद किसान निश्चित रूप से अपनी उपज और आय को बढ़ाएंगे।

इमरान खान
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

साक्षात्कार

हेल्दी क्रॉप, हैप्पी प्लैनेट के सिद्धांत पर काम करना एडीग्रो का मुख्य उद्देश्य - अजय जावला

खरीफ का मौसम किसानों के लिए नई उम्मीदें लेकर आता है, लेकिन साथ ही फसलों को बीमारियों और कीटों का खतरा भी बना रहता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए किसान रासायनिक और जैविक कीटनाशकों पर निर्भर करते हैं, लेकिन सही उत्पाद और ज्ञान के अभाव में कई बार उन्हें नुकसान भी उठाना पड़ता है। ऐसे में कृषि क्षेत्र में दशकों के अनुभव के साथ अजय जावला ने एक नई पहल की है। एडीग्रो कंपनी ने हाल ही में अपना नया लोगों लॉन्च किया है, जो किसानों को बेहतर समाधान देने के उनके संकल्प को दर्शाता है। एडीग्रो के निदेशक अजय जावला ने फसल क्रांति की पत्रकार फिजा काजमी को अपने दिए गए साक्षात्कार में बताया कि कैसे उनका यह प्रयास किसानों की मुश्किलों को कम करने और उनकी उपज बढ़ाने में मददगार साबित होगा। पेश हैं इस संवाद के कुछ महत्वपूर्ण अंश...

एडीग्रो क्या है और यह कृषि क्षेत्र में कैसे कार्य कर रही है?

एडीग्रो एक पूर्णतः स्वदेशी भारतीय कंपनी है, जो किसानों की फसलों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए उन्नत कृषि रसायनों का निर्माण करती है। कंपनी इंसेक्टिसाइड फंगीसाइड, हर्बीसाइड के साथ–साथ भविष्य में बीज, कृषि मशीनरी और स्प्रे उपकरणों पर भी काम करने की योजना बना रही है। एडीग्रो का मुख्य लक्ष्य किसानों को सस्ते और प्रभावी उत्पाद उपलब्ध कराकर उनकी फसलों को स्वस्थ रखना है।

एडीग्रो किन राज्यों में किसानों के लिए कार्य कर रही है?

एडीग्रो का कॉर्पोरेट कार्यालय गुरुग्राम में स्थित है। वर्तमान में कंपनी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड में अपने उत्पादों का वितरण कर रही है। गाजियाबाद (यूपी) में कंपनी का मुख्य वेयरहाउस है, जहां से उत्पादों को किसानों और वितरकों तक पहुंचाया जाता है। आने वाले समय में एडीग्रो पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और जम्मू–कश्मीर जैसे राज्यों में भी अपनी पहुंच बढ़ाने की योजना बना रही है।

कृषि क्षेत्र में नए बदलाव को लेकर एडीग्रो का क्या उद्देश्य है?

एडीग्रो का मुख्य उद्देश्य हेल्दी क्रॉप, हैप्पी प्लैनेट के सिद्धांत पर काम करना है। कंपनी का मानना है कि स्वस्थ फसलें न केवल किसानों को समृद्ध बनाएंगी, बल्कि पूरे पर्यावरण और मानव जीवन को भी बेहतर बनाएंगी। इसी दिशा में एडीग्रो किसानों को टिकाऊ और लागत–प्रभावी समाधान प्रदान कर रही है।

बाजार में मौजूद अन्य उत्पादों से एडीग्रो के उत्पाद कैसे अलग हैं?

आज बाजार में लगभग 260 कृषि रसायन कंपनियां कार्यरत हैं, जिनमें बहुराष्ट्रीय और भारतीय दोनों प्रकार की कंपनियां शामिल हैं। एडीग्रो इनमें से एक विश्वसनीय नाम बनकर उभर रही है। कंपनी की प्राथमिकता गुणवत्ता और किफायती मूल्य है। एडीग्रो के उत्पाद किसानों को कम लागत में अधिक लाभ प्रदान करते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है।

खरीफ सीजन में एडीग्रो के कौन–से उत्पाद उपयोगी हैं?

खरीफ सीजन में धान, गन्ना, मक्का और सब्जियों जैसी प्रमुख फसलों में कई बीमारियों का खतरा रहता है। गन्ने में लाल सड़न (रेड रॉट) एक गंभीर समस्या है, जिसके लिए एडीग्रो ने अडोक्सीटोप नामक एक प्रभावी उत्पाद लॉन्च किया है। यह उत्पाद भारत सरकार और सेंट्रल इंसेक्टिसाइड्स बोर्ड (CIB) द्वारा प्रमाणित है। इसके अलावा, एडीग्रो धान और अन्य फसलों के लिए भी उन्नत कीटनाशक विकसित कर रही है।

फसल क्रांति की ओर से आप किसानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

एडीग्रो की ओर से सभी किसान भाइयों को यह संदेश दिया जाता है कि वे किसी भी कृषि उत्पाद का उपयोग करने से पहले उसकी गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करें। कीटनाशकों का प्रयोग करते समय सुरक्षा उपकरण (जैसे दस्ताने और मास्क) का उपयोग अवश्य करें और डीलर या कृषि विशेषज्ञों से पूरी जानकारी लेकर ही उन्हें खेत में लगाएं।

फिजा काजमी
पत्रकार, फसल क्रांति
Email: fiza@fasalkranti.in

ADIGRO

Healthy Crop, Happy Planet

ADIGRO CROP SCIENCE PVT. LTD.

AN ISO 9001:2015 & 14001:2015 Certified Company

+91-9818260502
adigrocropscience@gmail.com
www.adigrocrop.com
08-201 , EMAAR Palm Hills, Gurgaon, Arjun Gardh, Sinkander Pur, Gurgaon, Haryana - 122004

हमें विकसित कृषि की भी चर्चा करनी होगी – डॉ. राजबीर सिंह

कृषि नवाचारों और तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए सरकार भरपूर प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत की गई है। इस अभियान के अंतर्गत संपूर्ण कृषि तंत्र किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाने में जुटा है। दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान फसल क्रांति की टीम ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के डॉ. राजबीर सिंह, उप महानिदेशक (कृषि प्रसार), से बातचीत की। उन्होंने इस अभियान के महत्व और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

क्या विकसित कृषि से विकसित भारत का निर्माण संभव है?

जब हम विकसित भारत की बात करते हैं, तो हमें विकसित कृषि की भी चर्चा करनी होगी। भारत की प्रगति का रास्ता खेत–खलिहान और किसानों से होकर ही गुजरता है। इसलिए हमें भविष्य की खेती की बात करनी होगी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिकों से जोड़ना है। "जय विज्ञान, जय अनुसंधान, जय किसान" के नारे को साकार करते हुए किसानों और वैज्ञानिकों के बीच समन्वय स्थापित करना आवश्यक है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत किसानों को कैसे जागरूक किया जा रहा है?

यह एक सामूहिक प्रयास है, जिसमें सभी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। देशभर के लगभग 700 कृषि संबंधित जिलों में यह पहल चलाई जा रही है। इस अभियान के तहत 2,000 से अधिक कृषि वैज्ञानिकों और अधिकारियों की टीम गठित की गई है, जो प्रतिदिन 5 से 10 कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इन कार्यक्रमों में किसानों से सीधा संवाद किया जा रहा है, जहां वे अपनी समस्याएं साझा करते हैं और वैज्ञानिक मौके पर ही उनके समाधान प्रस्तुत करते हैं। खरीफ सीजन की शुरुआत से पहले यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुहिम है, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के बारे में आपकी क्या राय है?

इस अभियान का नेतृत्व स्वयं माननीय कृषि मंत्री कर रहे हैं। वे देशभर के राज्यों के मुख्यमंत्रियों, कृषि मंत्रियों से सीधे संवाद स्थापित कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों में सरकार की योजनाओं की जानकारी दी जा रही है और किसानों को जागरूक किया जा रहा है। किसानों को सूचनात्मक साहित्य भी प्रदान किया जा रहा है और प्रगतिशील किसानों को भी इस पहल में शामिल किया गया है, जिससे अनुभव और नवाचार का समन्वय हो सके।

तकनीकी कृषि विस्तार किसानों के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

जब तक कृषि विस्तार को किसान, विज्ञान और अनुसंधान से जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक किसानों को इसका वास्तविक लाभ नहीं मिल पाएगा। आज की खेती में नई तकनीकें, प्रिसिजन फार्मिंग और सैटेलाइट आधारित सेवाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हो चुकी हैं। इसलिए किसानों को शिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम बनाना आवश्यक है। इस अभियान की एक बड़ी उपलब्धि यह रही कि देशभर के वैज्ञानिक, किसान और कृषि तंत्र इसमें सकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। हम देश के दूरदराज, यहां तक कि सीमा से लगे गांवों तक पहुंचे हैं और वहां भी यह अभियान प्रभावी रूप से चलाया जा रहा है।

किसानों के लिए आपका संदेश?

मैं किसानों से अपील करते हुए कहा, "मैं किसानों से कहना चाहूंगा कि वे इस अभियान का हिस्सा बनें और वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई तकनीकों को अपनाएं। विकसित भारत का सपना केवल किसान ही साकार कर सकते हैं। आइए, मिलकर आगे बढ़ें और विकसित भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।"

इमरान खान
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

संतुलित और पोषक उत्पादों से बढ़ेगी किसानों की फसल पैदावार - दीपक चौधरी

बिजनेस हेड, फर्टिग्लोबल

कृषि क्षेत्र में आज निरंतर नवाचार हो रहे हैं। निजी क्षेत्र भी किसानों की आय बढ़ाने और कृषि उत्पादन को उन्नत बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है। ऐसी ही एक अग्रणी कंपनी फर्टिग्लोबल के बिजनेस हेड दीपक चौधरी से फसल क्रांति की संवाददाता फिजा काजमी ने विशेष बातचीत की। उन्होंने बताया कि कैसे फर्टिग्लोबल भारतीय किसानों को गुणवत्ता–आधारित कृषि उत्पादों और तकनीकों से जोड़ने का कार्य कर रही है। प्रस्तुत हैं इस साक्षात्कार के प्रमुख अंश–

आपने फर्टिग्लोबल के साथ अपना सफर कैसे शुरू किया और वर्तमान में क्या भूमिका निभा रहे हैं?

मैंने 2006 में एमबीए के बाद चंबल फर्टिलाइजर के साथ अपने करियर की शुरुआत की। लगभग 10 वर्षों तक वहाँ विभिन्न भूमिकाओं में कार्य किया, विशेष रूप से पंजाब क्षेत्र में डिप्टी मैनेजर के रूप में। इसके बाद मैटिक्स फर्टिलाइजर में कुछ समय तक काम किया और फिर एफआईएल इंडस्ट्रीज में न्यूट्रिशन बिजनेस की शुरुआत की, जहाँ मैंने लगातार 5 वर्षों तक सेवा दी। वर्ष 2023 से मैं एससीएल इंडिया के डायरेक्ट चैनल सेल्स को लीड कर रहा हूँ और फर्टिग्लोबल में बिजनेस हेड के रूप में कार्यरत हूँ।

फर्टिग्लोबल कृषि क्षेत्र में किस प्रकार कार्य कर रही है?

फर्टिग्लोबल, SCL Italia का फर्टिलाइजर डिवीजन है, जिसकी स्थापना लगभग 200 वर्ष पहले हुई थी। यह एक शोध–आधारित वैश्विक कंपनी है, जो पूरी दुनिया में कृषि उत्पाद प्रदान कर रही है। भारत में यह कंपनी वर्ष 2017 से कार्यरत है। 2017 से 2022 तक हमने केवल बी2बी मॉडल पर काम किया, लेकिन 2022 से हमने डायरेक्ट सेल्स शुरू की। आज हम भारत के 18 राज्यों में कार्य कर रहे हैं। हमारी सफलता का प्रमुख कारण है– अनुसंधान आधारित उत्पाद और उनकी विशिष्ट गुणवत्ता। हम किसानों तक उच्च गुणवत्ता वाले उर्वरक और न्यूट्रिशन उत्पाद पहुँचाने का काम कर रहे हैं।

फर्टिग्लोबल के उत्पाद किसानों का विश्वास कैसे जीत रहे हैं?

हमारे सभी उत्पादएक ही प्लांट से पूरी दुनिया में निर्यात किए जाते हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता एक समान रहती है। हम अनुसंधान पर विशेष ध्यान देते हैं और अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करते हैं। हमारे 15 उत्पाद पेटेंटेड हैं, जो बाजार में अन्य उत्पादों से बिल्कुल अलग और बेहतर परिणाम देने वाले हैं। हम प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि नवाचार और विश्वसनीयता में विश्वास करते हैं। इसके अलावा, हमारी फील्ड टीम जमीनी स्तर पर किसानों के साथ मिलकर काम करती है और हम कृषि विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी कर रहे हैं। इस तरह हम विज्ञान और सेवा दोनों मोर्चों पर समान रूप से सक्रिय हैं।

आने वाले 5 वर्षों में आप कंपनी की विकास यात्रा को कहां देखते हैं?

हमें डायरेक्ट मार्केट में आए हुए मात्र तीन वर्ष हुए हैं, लेकिन इस अवधि में हमने खुद को एक पहचान के रूप में स्थापित किया है। आज हम 18 राज्यों में कार्य कर रहे हैं, जिनमें से 6 राज्यों–जैसे हिमाचल, कश्मीर, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश में अग्रणी कंपनियों में शामिल हैं।

हमारी कार्य नीति 5पी मॉडल पर आधारित है–

- **प्रोडक्ट**– अनुसंधान आधारित, पेटेंटेड और रिजल्ट ओरिएंटेड उत्पाद
- **प्राइस**– किसानों की लागत को ध्यान में रखते हुए मूल्य निर्धारण
- **प्लेसमेंट**– फसल और क्षेत्र के अनुसार उत्पाद की उपयुक्तता
- **प्रमोशन**– समय पर प्रचार और जानकारी
- **पीपल**– हमारी टीम और किसानों का मजबूत नेटवर्क

हमारे उत्पादों का प्रचार स्वयं किसान करते हैं यह हमारे लिए सबसे बड़ी सफलता है।

फर्टिग्लोबल किसानों को कृषि तकनीकों से कैसे जोड़ रही है?

हमारी कंपनी के पास म्दछनटप तकनीक है, जो यूरोपीय यूनियन द्वारा प्रमाणित और सब्सिडी युक्त है। यह तकनीक केवल पोषण नहीं देती, बल्कि पौधों की रक्षा भी करती है। हमारे उत्पाद फसलों के लिए पूरी तरह सुरक्षित हैं और कीट प्रबंधन में भी सहायक हैं।

इसके अतिरिक्त, ये उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल हैं। हम सुरक्षित उत्पादों के माध्यम सेसुरक्षित और समृद्ध खेती के लिए किसानों को प्रशिक्षित कर रहे हैं और उन्हें जागरूक बना रहे हैं।

आप किसानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं किसान भाइयों से फसल क्रांति के माध्यम से यह कहना चाहूँगा कि उर्वरकों का असंतुलित उपयोग भूमि की उर्वरता को नुकसान पहुँचा रहा है। अत्यधिक मात्रा में उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इसलिए, मैं किसानों से आग्रह करता हूँ कि वे खेती के तरीकों में बदलाव करें, संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें और पोषक तत्वों से भरपूर न्यूट्रिशन उत्पादों को अपनाएं। इससे न केवल उनकी फसल की गुणवत्ता बढ़ेगी, बल्कि भूमि की सेहत भी बेहतर बनी रहेगी।

फिजा काजमी
पत्रकार, फसल क्रांति
Email: fiza@fasalkranti.in

दोगुनी आय का सपना सच होगा!
अंबर क्रॉप के ये प्रोडक्ट्स बदल रहे हैं किसानों की तकदीर

मॉनसून का मौसम किसानों के लिए जहां फसलों की बढ़त का समय होता है, वहीं इस दौरान फसलों को कीटों से बचाना भी एक बड़ी चुनौती बन जाती है। कीटनाशकों का सही चुनाव और उनका प्रभावी उपयोग ही फसलों को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी विषय पर गहन जानकारी प्राप्त करने के लिए फसल क्रांति की पत्रकार फिजा काजमी ने अंबर क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिडेट के चेयरमैन सुनील गुप्ता और कंपनी के फाइनेंस कंट्रोलर मुकुल गुप्ता से विशेष बातचीत की। इस इंटरव्यू में उन्होंने फसल सुरक्षा के लिए बाजार में उपलब्ध नवीनतम उत्पादों, कीट प्रबंधन के तरीकों और किसानों को दी जाने वाली सहायता के बारे में विस्तार से चर्चा की। पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश...

अंबर क्रॉप साइंस की शुरुआत और विकास यात्रा कैसी रही?

अंबर क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना 2008 में हरियाणा के सोनीपत में की गई थी। हमने पेस्टिसाइड्स के 5 उत्पादों के साथ छोटी शुरुआत की थी। आज हमारे पास 300 रजिस्ट्रेशन और 100 से अधिक उत्पादों की पोर्टफोलियो है, जो किसानों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यह सफलता हमारे टीम के समर्पण और किसानों के विश्वास का परिणाम है।

अंबर क्रॉप के प्रमुख उत्पाद कौन–से हैं?

हमारे पास हर्बिसाइड्स, फंगिसाइड्स, इंसेक्टिसाइड्स, पेस्टिसाइड्स और PGRs (प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर्स) की पूरी श्रृंखला है। कुछ प्रमुख ब्रांड्स जिसमें हर्बिसाइड्स में पटिला क्लोर, ई–डब्लू उजला, इंसेक्टिसाइड्स में अभेद सुपर, कारा जीआर, फंगिसाइड्स में टॉम, काईकैन, जैक्सन ऑर्गेनिक उत्पाद में गोची, माइको राजा, टेरी समेत अन्य उत्पाद शामिल हैं। बता दें हमारे 50% उत्पाद ट्रेड मार्क रजिस्टर हैं, जो गुणवत्ता और विश्वसनीयता का प्रतीक हैं।

अंबर क्रॉप के उत्पाद किन राज्यों में उपलब्ध हैं?

हम मुख्य रूप से उत्तर भारत में सक्रिय हैं, जिसमें पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और उत्तराखंड शामिल हैं। हमारा 800 डीलर नेटवर्क और 40,000 किसानों का डेटाबेस है। साथ ही, हम मृदा परीक्षण, किसान गोष्ठियों और फील्ड एक्टिविटीज के माध्यम से किसानों को जागरूक करते हैं।

बायोपेस्टिसाइड्स और ऑर्गेनिक फार्मिंग में अंबर क्रॉप की क्या भूमिका है?

हम टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए ऑर्गेनिक मैन्योर (गोची), बायोफर्टिलाइजर्स (रोजी, मनित, जेडेन 16) और माइकोराइजा–आधारित उत्पाद पेश करते हैं। सरकार द्वारा बायोपेस्टिसाइड्स को प्रोत्साहित किए जाने के साथ, हम जल्द ही इस क्षेत्र में नए उत्पाद लॉन्च करेंगे।

फसल क्रांति के माध्यम से किसानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

फसल क्रांति किसानों और कंपनी के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हमारा संदेश स्पष्ट है– किसी भी उत्पाद का उपयोग करने से पहले उसकी सही मात्रा और उपयोग–विधि जानें। हम किसान मेलों, चौपालों और ट्रेनिंग्स के जरिए इस जागरूकता को बढ़ा रहे हैं।

चेयरमैन– सुनील गुप्ता – अंबर क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड

मैनेजिंग निदेशक– संजय गुप्ता – अंबर क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड

फिजा काजमी
पत्रकार, फसल क्रांति
Email: fiza@fasalkranti.in

हल ब्राण्ड

BE SMART
AGRI ENTRPRENEUR

Changing
Farmers Life

amber®

AN ISO 9001: 2015 CERTIFIED CO.

साक्षात्कार

बायोफ्यूल क्षेत्र से जुड़कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं- रफीक मांकड

कृषि क्षेत्र में हो रहे निरंतर नवाचारों ने किसानों के लिए नए अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। हालांकि, अब भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में किसानों को पर्याप्त जानकारी नहीं है। बायोफ्यूल उद्योग ऐसा ही एक क्षेत्र है, जो किसानों के लिए एक मजबूत और स्थायी आय का स्रोत बन सकता है। इस विषय में फसल क्रांति ने एडवांस बायोफ्यूल के चेयरमैन रफीक मांकड़ से विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत हैं उस संवाद के प्रमुख अंश...

एडवांस बायोफ्यूल किस प्रकार कार्य कर रही है?

हम पिछले 12 वर्षों से बायोफ्यूल क्षेत्र में सक्रिय हैं, विशेषकर किसानों के हित में कार्य कर रहे हैं। बायोफ्यूल का कृषि से गहरा संबंध है और हमारा उद्देश्य शुरुआत से ही खेती से जुड़ी तकनीकों को बढ़ावा देना रहा है। बायोफ्यूल क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का प्रत्यक्ष लाभ किसानों को ही होता है। जैसे–जैसे कृषि में नई तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है, किसानों को भी इनका अपनाना चाहिए। बायोफ्यूल निश्चित रूप से किसानों के लिए एक बड़ा अवसर बन सकता है।

किसानों के लिए बायोफ्यूल क्षेत्र में क्या संभावनाएं हैं?

बायोफ्यूल क्षेत्र में कई प्रकार के अवसर मौजूद हैं। उदाहरण के तौर पर बायोगैस वर्षों से चल रही इस तकनीक में अब आधुनिक नवाचार हो चुके हैं। आज बायोगैस का व्यावसायिक उपयोग हो रहा है और भारत सरकार भी इसे खरीदती है। किसान अपने पशुओं का गोबर बायोगैस प्लांट संचालकों को बेच सकते हैं, जिससे उन्हें स्थायी आय मिल सकती है। आमतौर पर किसान फसल के अवशेषों को जला देते हैं या फेंक देते हैं, जबकि इन्हें कंपनियों को बेचकर अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। ये अवशेष पेलेट बनाने वाली कंपनियों के लिए कच्चा माल होते हैं।

क्या इस क्षेत्र में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग का भी विकल्प है?

बिलकुल। यदि किसी गाँव के सभी किसान मिलकर फसल अवशेष को इकट्ठा कर किसी कंपनी से अनुबंध करें, तो यह गाँव के लिए आय का बड़ा स्रोत बन सकता है। इसके अलावा, किसान बंजर पड़ी जमीनों पर नेपियर घास उगाकर भी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। यह घास लगभग हर प्रकार की मिट्टी में उग जाती है, बस थोड़ी पानी की आवश्यकता होती है। इथेनॉल उत्पादन के लिए चावल, गेहूं, गन्ना आदि का उपयोग होता है। किसान अक्सर खराब अनाज फेंक देते हैं, लेकिन ये भी इथेनॉल बनाने वाली कंपनियों के लिए उपयोगी होता है। किसानों को इन्हें बेचकर भी आय अर्जित करनी चाहिए।

बायोडीजल के क्षेत्र में किसान कैसे अपनी आय बढ़ा सकते हैं?

जेट्रोफा एक ऐसा पौधा है जिससे बायोडीजल तैयार किया जाता है। यह पौधा बंजर जमीन पर भी उगाया जा सकता है। किसान जेट्रोफा उगाकर बायोडीजल बनाने वाली कंपनियों को बेच सकते हैं। कुछ साल पहले सरकार ने भी जेट्रोफा के उत्पादन को प्रोत्साहित किया था। इस क्षेत्र में किसानों को जानकारी की कमी है, जबकि यह एक लाभकारी विकल्प है। सरकार की कई योजनाएं और सब्सिडी भी इस क्षेत्र के लिए मौजूद हैं।

किसान इस क्षेत्र में कैसे आगे आ सकते हैं?

इस क्षेत्र में कई कंपनियां किसानों के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। बस जरूरत है कि किसान एक पहल करें। यदि हर गाँव से कुछ किसान आगे बढ़ें और कंपनियों से संपर्क करें, तो उनकी आमदनी में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। बायोफ्यूल उद्योग भारत में तेजी से बढ़ रहा है और इसके लिए आवश्यक कच्चा माल किसानों से ही आता है। इसलिए, यह क्षेत्र किसानों के लिए एक शानदार अवसर बनकर उभर रहा है।

आप किसानों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं किसानों से कहना चाहूँगा कि वे नई संभावनाओं के प्रति जागरूक बनें और बायोफ्यूल क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लें। सरकार इस दिशा में किसानों को प्रोत्साहित कर रही है। कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, ऐसे में किसानों को खेती के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़ते हुए बायोफ्यूल जैसे नवाचारों को अपनाना चाहिए।

इमरान खान
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

50 बॉक्स से शुरू किया मधुमक्खी पालन, अब बन चुके हैं दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत

वर्तमान समय में जहाँ कुछ युवा खेती से दूरी बना रहे हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो कृषि को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर सफल उद्यमी बन रहे हैं। आज हम बात कर रहे हैं ऐसे ही एक युवा किसान रवि ढाका की, जिन्होंने पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी के बजाय कृषि क्षेत्र को अपना करियर बनाया।

बागपत जिले की बड़ौत तहसील के अंतर्गत ढिकौली गांव के निवासी रवि ढाका बचपन से ही मेहनती रहे हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने कुछ नया करने की ठानी और इसी दौरान वे डॉ. जे.के. श्योराण के संपर्क में आए। यहीं से उन्हें कृषि क्षेत्र का सही मार्गदर्शन मिलना शुरू हुआ। डॉ. श्योराण के मार्गदर्शन में रवि ने मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण लेने के बाद रवि ने अन्य किसानों से भी इस व्यवसाय के बारे में जानकारी ली और उनका रुझान मधुमक्खी पालन की ओर बढ़ने लगा। इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्र से उन्हें काफी सहयोग मिला।

रवि ने प्रारंभिक चरण में 50 बॉक्स से मधुमक्खी पालन की शुरुआत की थी, जो अब बढ़कर 100 से अधिक बॉक्स हो चुके हैं। रवि कहते हैं, "हम शुरू से ही खेती से जुड़े रहे हैं। अब केवल गन्ने की खेती के भरोसे नहीं रहा जा सकता। किसान अब पारंपरिक खेती से हटकर भी अनेक कार्य कर सकते हैं।" इसी सोच के साथ रवि ने मधुमक्खी पालन को अपनाया।

रवि ने न सिर्फ स्वयं इस व्यवसाय को आगे बढ़ाया, बल्कि अपने अन्य साथियों को भी मधुमक्खी पालन से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद की। उन्हें उम्मीद है कि आने वाले समय में उनके बॉक्स की संख्या और भी अधिक बढ़ेगी।

शुरुआती समय में रवि को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्होंने ₹50,000 की पूंजी लगाकर इस व्यवसाय की शुरुआत की थी। उनका मानना है कि किसान कम पूंजी में भी मधुमक्खी पालन जैसे लाभकारी व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं।

मधुमक्खी पालन की तकनीकी जानकारी साझा करते हुए रवि कहते हैं कि इसके लिए सबसे पहले प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। फिर उचित नस्ल का चयन करना होता है। आमतौर पर एपिस मेलीफेरा (Apis mellifera) नस्ल की मधुमक्खी से पालन किया जाता है, जिससे अच्छा उत्पादन मिलता है।

रवि यह भी बताते हैं कि मधुमक्खी पालन के लिए ऐसे स्थान का चयन नहीं करना चाहिए जहाँ फसलों में कीटनाशकों का अधिक उपयोग होता हो, क्योंकि इससे मधुमक्खियाँ मर जाती हैं और पालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

आज रवि ढाका एक सफल युवा कृषि उद्यमी के रूप में जाने जाते हैं और अन्य किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुके हैं। वे अपने अनुभव साझा कर किसानों को इस व्यवसाय से जुड़ने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

फसल उत्पादन में बीज जमाव परीक्षण एवं बीज उपचार का महत्व

परिचय–

भारत की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका कृषि पर निर्भर है। बढ़ती जनसंख्या, घटती भूमि उत्पादकता, जलवायु परिवर्तन तथा बीज जनित एवं मृदा जनित रोगों के बढ़ते प्रभाव ने किसानों के समक्ष अनेक चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिक तरीकों से कृषि करना समय की मांग बन गई है। फसल उत्पादन की प्रक्रिया में 'बीज' सबसे मूलभूत और निर्णायक घटक है। बीज की गुणवत्ता ही फसल की गुणवत्ता और उत्पादन की दिशा निर्धारित करती है। इसलिए बीज जमाव परीक्षण एवं बीज उपचार दो ऐसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं, जिन्हें हर प्रगतिशील किसान को अपनाना चाहिए। ये दोनों उपाय न केवल फसल की प्रारंभिक वृद्धि को सुनिश्चित करते हैं, बल्कि उच्च उत्पादन की नींव भी रखते हैं।

1. बीज जमाव परीक्षण का वैज्ञानिक दृष्टिकोण–

बीज जमाव परीक्षण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बीजों की अंकुरण क्षमता का आकलन किया जाता है। यह परीक्षण बताता है कि उपलब्ध बीजों में से कितने प्रतिशत बीज व्यवहारिक रूप से अंकुरित होकर अच्छे पौधे बनाएंगे।

बीज जमाव परीक्षण का उद्देश्य–

- बीज की जीवंतता एवं शुद्धता की जांच।
- खराब अंकुरण वाले बीजों को पहचान कर हटाना।
- सटीक बीज दर की गणना करना, जिससे बीज की बर्बादी रोकी जा सके।
- किसानों को समय, श्रम और धन की बचत सुनिश्चित करना।
- अच्छी अंकुरण क्षमता वाले बीजों से खेत में समान और स्वस्थ पौधों की संख्या अधिक होती है।

बीज जमाव परीक्षण की विधि–

आवश्यक सामग्री–

1. बीज जिसका जमाव परीक्षण करना है
2. जूट के बोरे / मोटे कपडे के 2 टुकड़े
3. पानी आवश्यक मात्रा में

बीज जमाव परीक्षण विधिः–

1. सर्वप्रथम जूट के बोरे / मोटे कपडे के 2 टुकड़े को पानी से गीला कर अलग रख लें।
2. बीज का पैकेट खोल कर थोड़ा सा बीज सैंपल निकलते हैं।
3. अब निकले सैंपल बीज को गीले बोरे के टुकड़े पर लाइन में रखें जिसे के चित्र में हैं।
4. अब रखे बीज के गिनती करके लिख लें गीले बोरे के दूसरे टुकड़े से इस बीज को ढक दें।
5. नमी का स्तर बनाये रखने हेतु यदि आवश्यक हो तो पानी का छिड़काव करें।
6. बीज का अंकुरण 3–4 दिन में हो जायेगा।

अंकुरण प्रतिशत के गणना– अंकुरित बीजो गिनती कर लें एवं नीचे लिखे फार्मूला से जमाव प्रतिशत ज्ञात कर लें

$$\text{अंकुरण प्रतिशत} = \frac{\text{अंकुरित बीज की संख्या} \times 100}{\text{जमाव हेतु रखे बीज की संख्या}}$$

विशेष ध्यान देने योग्य बातें–

- बीज को अंकुरण के लिए उपयुक्त तापमान और नमी की आवश्यकता होती है।
- बीज पुराने हैं या नमी में रखे गए हैं तो जमाव दर कम हो सकती है।

2. बीज उपचार– रोगों से सुरक्षा एवं पोषण की पहली खुराक

बीज उपचार (Seed Treatment) का उद्देश्य बीज को बीज जनित तथा मृदा जनित रोगों से बचाना, प्रारंभिक वृद्धि को सशक्त बनाना तथा पोषक तत्वों की पूर्ति करना है। यह एक ऐसी आवश्यक प्रक्रिया है जो खेत में बुआई से पूर्व की जाती है, परंतु इसके प्रभाव पूरे फसल चक्र पर पड़ते हैं।

बीज उपचार के लाभ–

- फफूंद, कीट एवं बैक्टीरिया जनित रोगों जैसेरू रतुआ, झुलसा, अर्धगलन से बीज एवं अंकुर की रक्षा।
- अंकुरण दर में वृद्धि तथा पौधों की एकरूपता।
- जैविक उपचारों द्वारा मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्मजीवों की वृद्धि।
- प्रारंभिक वृद्धि में तेजी आने से खरपतवारों पर दबाव।
- कुछ जैविक उपचार (जैसे– ट्राइकोडर्मा, पीएसबी, राइजोबियम आदि) फसल की पोषण उपलब्धता को बढ़ाते हैं।
- उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि।
- कीटों द्वारा बीज की हानि से बचाव।

बीज उपचार के प्रमुख प्रकार–

जैविक उपचार–

- फफूंदनाशक एजेंट– ट्राइकोडर्मा विरिडी, ट्राइकोडर्मा हारजिनियम।
- जैव उर्वरक– राइजोबियम (दलहनी फसलें), एजोटोबैक्टर, पीएसबी (फॉस्फेट घुलनशील बैक्टीरिया)।
- लाभ– टिकाऊ खेती, पर्यावरण सुरक्षा, लागत में कमी।

पोषक तत्व उपचार–

- जिंक सल्फेट, बायोह्युमिक, सी वीड एक्सट्रैक्ट, बायोस्टिमुलेंट्स आदि से बीज उपचार कर पौधों की जड़ वृद्धि और पोषण क्षमता में वृद्धि की जाती है।

बीज उपचार जर्मिनेटर के साथ–

फसलों के बीज उपचार के लिए फफूंद एवं जीवाणु जनक रोगनाशी तथा विभिन्न प्रकार के बायोफर्टिलाइजर के जीवाणु कल्चर की जरूरत होती है और सभी सामान्य रूप से अलग अलग मिलते हैं। जिस कारण प्रयोग में कठिनाई होती है एवं मूल्य भी अधिक होता है।

इसका विकल्प एक भारतीय कंपनी एशिया डॉन बायो केयर ने

जर्मीनेटर के रूप में लाइओफिलाइजेशन टेक्नोलॉजी से तैयार किया है। किसान उत्पाद को अपने घर में सामान्य तापक्रम पर 2 वर्षों के भीतर कभी भी उपयोग कर सकता है। जर्मीनेटर एक पैकेट में एक एकड़ फसल के बीज उपचार के आवश्यक जैविक फंगीसाइड एवं बायोफर्टिलाइजर उपलब्ध हैं। इसके उपयोग का तरीका भी बहुत सुगम है।

जर्मीनेटर में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, जिंक उपलब्ध करने वाले बायोफर्टिलाइजर, माइकोराइजा एवं ट्राइकोडर्मा,स्यूडोमोनास आदि है। जर्मीनेटर से बीज उपचार करने से पौध के जड़ में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, जिंक, उपलब्ध कराने वाले जीवाणु पहुंच जाते हैं। यह वातावरण में उपलब्ध नाइट्रोजन को उपलब्ध कराते हैं तथा फास्फोरस मोबिलाइजिंग बैक्टीरिया जो भी फास्फोरस जमीन में जमा है उसको घुलनशील कर उपलब्ध कराते हैं पोटाश एवं जिंक मोबिलाइजिंग बैक्टीरिया भी इसी तरह काम करते हैं।

बीज उपचार का तरीका–

बीज उपचार के लिए 100 ग्राम गुड़ को 1 से 2 लीटर पानी में अच्छी तरह उबाल लेते हैं और ठंडा करते हैं। आवश्यक मात्रा के बीज के ऊपर इस गुड के घोल को छिड़क कर अच्छी तरह हल्के हाथों से मिला देते हैं

कृषि में बीज परीक्षण एवं उपचार के प्रभाव का व्यावहारिक दृष्टिकोण:

प्रक्रिया	लाभ	परिणाम
बीज जमाव परीक्षण	खराब बीजों की पहचान	उच्च अंकुरण, समान पौध
जैविक उपचार	पोषण व रोग नियंत्रण	पर्यावरण अनुकूल, स्थायी समाधान
पोषक तत्व उपचार	वृद्धि प्रोत्साहन	मजबूत जड़, अधिक उपज

अब इसके ऊपर जर्मिनेटर के पैकेट को खोलकर बीज पर छिटक कर हल्के हाथों से मिलकर बीज को छांव में रखते हैं तत्पश्चात इसकी बुवाई करते हैं।

किसी भी कृषि पद्धति की सफलता का प्रथम चरण है– गुणवत्तापूर्ण बीज। लेकिन बीज की गुणवत्ता केवल इसके आकार या चमक से नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता और सुरक्षा से निर्धारित होती है। बीज जमाव परीक्षण से यह सुनिश्चित होता है कि बुआई के लिए प्रयुक्त बीज उच्च अंकुरण क्षमता वाले हैं। वहीं बीज उपचार से बीज और अंकुर प्रारंभिक अवस्था में ही रोगों से सुरक्षित रहते हैं और उनका पोषण भी सुनिश्चित होता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और जोखिमपूर्ण कृषि परिवेश में, इन दोनों तकनीकों को अपनाकर किसान कम लागत में उच्च गुणवत्ता वाली उपज प्राप्त कर सकते हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि–

"यदि बीज जीवन का आधार है, तो उसका परीक्षण और उपचार ही समृद्ध फसल का प्रारंभिक बीमा है।"

लेखक– **संजय श्रीवास्तव**

AGROXY CROPS SOLUTIONS PVT. LTD.
A-9, West Jyoti Nagar, Durgapuri Chowk Shahdara, Delhi -94
Phone: 011 - 2281 5345, 9625941688
Email: info@fasalkranti.in, Website: www.fasalkranti.in

Fasal Kranti
New Vision for Agriculture

सदस्यता फॉर्म

नाम..

पिता का नाम..

पता..

जिला / शहर................................ राज्य................................

पिनकोड.................... मोबाईल.................... ईमेल ....

Year	Issue	Price (Rs.)	Discount (Rs.)	Total Amount
☐ 1	12	720	0	720
☐ 2	24	1440	140	1320
☐ 3	36	2160	360	1800
☐ 5	60	3600	600	3000

तिथि

हस्ताक्षर

जुलाई महीने के कृषि कार्य

जुलाई महीना वर्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है इस माह मे सम्पूर्ण देश के लगभग सभी भागो में वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। अधिक वर्षा होने पर विभिन्न फसलों जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर,उड़द,मूंग इत्यदि फसलो में जल भराव होने से नुकसान होने की अधिक सम्भावना रहती है। इसलिए उचित जल निकास आवश्यक है। इस महीने मे धान की सीधी बुवाई तथा रोपाई के अतिरिक्त अन्य वर्षा कालीन फसलों जैसेदृ ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, मूंग और कुछ चारा वाली फसलों की बुवाई भी की जा सकती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न सब्जियों, फूल वाली फसलों तथा फल वृक्षों की रोपाई का कार्य भी किया जा सकता है। इस लेख में जुलाई माह में किए जाने वाले विभिन्न कृषि कार्यो का उल्लेख किया जा रहा है ।

धान की रोपाई

- पौधशाला में जब पौध 20–25 दिनों की हो गई हो तो खेत की 2–3 जुताई के बाद पडलिंग करके रोपाई 20 सें.मी. पंक्ति से पंक्ति तथा 15 सें.मी. पौधे से पौधे की दूरी पर कर देनी चाहिए।
- जिन खेतो में रोपाई की जा चुकी हो, लगभग एक सप्ताह के बाद खेत के चारो तरफ घूम के देख लेना चाहिए कही कतार मे पौधे तो नही मरे है। जिन कतारों मे पौधे मरे हो वहाँ दोबारा पौधा लगा देना चाहिए।
- रोपाई के दो सप्ताह के बाद नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा (लगभग 50 कि. ग्रा. प्रति हे.) का प्रयोग करने से किल्लो की संख्या मे बढ़ोत्तरी होती है।
- खरपतवार नियंत्रण के लिये बजार मे उपलब्ध ब्यूटाक्लोर 50 ई सी की 3.0 कि.ग्रा या प्रीटालाक्लोर 50 ई सी की 1.20 किलोग्राम मात्रा रोपाई के तीन दिन पश्चात तक 400 लीटर पानी में घोल बनाकर समान रूप से छिड़काव कर देना चाहिए।
- रोपाई के 15–20 दिनो के पश्चात बिसपाइरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस०सी० की बाजार में उपलब्ध 300 ग्राम मात्रा की लगभग 400 लीटर प्रति हे० की दर से पानी में घोलकर फ्रलेट पैन नाजिल से छिड़काव किया जा सकता है ।
- धान बुआई की सघनता पद्धति (एस. आर. आई.)
- धान उत्पादन की एस. आर. आई.) प्रणाली के अंतर्गत 12 से 14 दिनों मे नर्सरी तैयार हो जाती है। तैयार पौध को पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी भी 25 सेमी रखते हुये रोपित करते है।
- इसके अतिरिक्त मैट प्रकार की नर्सरी की रोपाई के लिए, मैकेनिकल ट्रांसप्लांटर द्वारा 30x12 सेमी के अंतर पर रोपाई की जाती है।
- रोपाई करने के बाद खेत में पानी की मात्रा का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार पानी देते रहना चाहिए।
- धान सघनता पद्धति द्वारा बीज, पानी एवं पोषक तत्वों की बचत के साथ साथ अधिक उपज भी प्राप्त होती है। तथा धान सघनता पद्धति अपनाने से लागत कम आती है।
- खेत में खरपतवारों को हस्तचालित अथवा शक्ति चालित यन्त्र द्वारा नियन्त्रित करने के साथ–साथ मिट्टी में वायु संचार भी बढ़ता है। इसके द्वारा जड़ों का विकास अच्छा होता है तथा खेत में लाभदायक जीवों की संख्या में भी वृद्धि होती है।

धान की सीधी बुआई प्रणाली

- धान की सीधी बुआई या डायरेक्ट सीडिंग के अंतर्गत जमीन को समतल करके सिंचाई देने के पश्चात खेत मे पडलिंग करके या सूखे खेत मे पंक्तियो मे मशीन की मदद से बीज की बुवाई की जा जाती है।
- धान की सीधी बुवाई मशीन द्वारा शून्य जुताई प्रणाली में भी खेती की जा सकती है। धान की बुआई और खरपतवार नाशक का छिड़काव एक साथ मशीन द्वारा भी किया जा सकता है।
- इस विधि के प्रयोग द्वारा समय, संसाधन (पानी,श्रम व ऊर्जा) तथा धन की बचत कर रोपाई विधि की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
- धान की सीधी बुआई के लिये अनेक उन्नत किस्में जैसे पूसा बासमती 1718, पूसा बासमती 1121, 1509, पूसा बासमती 6, साथी, डी आर आर धान 45, 46,पी आर 126, 111, 115, 123, पंत धान 12, नीधी, नरेंद्र 359 इत्यादि किस्मो के 25–30 किलोग्राम बीज को पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से. मी. रखते हुवे 2–3 से. मी. की गहराई पर बुवाई कर देनी चाहिये।
- खरपतवारो के उचित नियंत्रणहेतु बाजार में उपलब्ध ब्यूटाक्लोर 50 ई सी या पेंडीमेथलीन 30 ई सी की 3.0 कि.ग्रा या प्रीटालाक्लोर 50 ई सी की 1.20 किलोग्राम मात्रा बुवाई के दो –तीन दिन पश्चात तक 400 लीटर पानी में घोल बनाकर समान रूप से छिड़काव कर देना चाहिए ।
- बुआई के 15–20 दिनो के पश्चात बिसपाइरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस०सी० की बाजार में उपलब्ध 300 ग्राम मात्रा को लगभग 400 लीटर प्रति हे० की दर से पानी में घोलकरफ्लेट पैन नाजिल से छिड़काव किया जा सकता है।
- अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए फसल में 120 से 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटैशियम की आवश्यकता होती है।

मक्का की बुवाई

- जुलाई महीना के शुरू या मध्य जुलाई तक मक्के की बुआई अवश्य कर लेनी चाहिए। मानसून आने मे देरी हो तो इस दशा में बुवाई से पूर्व एक सिंचाई देकर ही खेत की तैयारी करें।
- बीज की मात्रा विभिन्न प्रजातियों के लिए अलग–अलग जैसे दाने एवं भुट्टे हेतु 20 कि.ग्रा./हे.,स्वीट कॉर्न हेतु 8 कि.ग्रा./हे.,बेबी कॉर्न हेतु 25 कि.ग्रा./हे.,पॉपकॉर्न हेतु 12 कि.ग्रा./हे, तथा चारे हेतु 40–50 कि.ग्रा./हे. प्रयोग की जा सकती है।
- बुआई से पहले बीजोपचार के लिए कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम/कि. ग्रा. या एप्रन 35 एस डी 4 ग्रा. या एग्रोसन जी एन की 4 ग्राम तथा इमिडाक्लोप्रिड 3 मि.ली./कि. ग्रा.बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- बुआई की विधि मे फ्लैट सरफेस यारिज एंड फोर्रो, या ब्रॉड बेड़ एंड

फोर्रो पद्धति में सीड ड्रिल या हल के द्वारा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेमी एवम पौधे से पौधे की दूरी 20 से मी रखते हुवे पंक्तियों में करनी चाहिए।

- यदि मृदा मे कार्बनिक पदार्थों की कमी हो तो खेत मे गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद या ढेंचा हरी खाद का प्रयोग कर जीवांश की कमी को पूरा किया जा सकता है। सामान्यतः पूर्णकालिक किस्मों के लिए 120–150 कि.ग्रा. / हैक्टेयर नाइट्रोजन तथा मध्यम व जल्दी पकने वाली किस्मों के लिए क्रमशः 80–100 व 60–80 कि.ग्रा. / हैक्टेयर नाइट्रोजन पर्याप्त होती है। जबकि 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 40 कि.ग्रा. / हैक्टेयर पोटाश सभी वर्गों की किस्मों के लिए आवश्यक है।
- खरपतवार नियंत्रण के लिये बुवाई के 2 दिन पश्चात तक एट्राजिन की बाज़ार में उपलब्ध 2 लीटर मात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से सामान रूप से छिड़काव करना चाहिए।
- इसके बाद 25 –30 दिन की फसल होने पर एक गुड़ाई या 2,4–डी (58 प्रतिशत) की 1.70 लीटर मात्रा या टेम्बोट्रिन(42 प्रतिशत) की 285 ग्राम मात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से सामान रूप से छिड़काव करना चाहिए।

ज्वार की बुवाई

- ज्वार की चारे के लिए उन्नतशील किस्में पूसा चरी 1, 6, 9, 23, हरियाणा चरी 136,260, एस एल 44, पंत चरी 4, यू पी चरी 1,2 , राजस्थान चरी 1,2 हाइब्रिडःसीएस एच 9, 10,11,14,18,25,30,23, एस पी एच 388, 468 सिंगल कट तथा डबल कट के लिए सीओ 27, जी एफ एस एच , मल्टी कट के लिए मीठी सूडान, जवाहर चरी 69, पी सी एच 106,पंजाब सुडेक्स चरी 1, सफेद मोती, पूसा चरी हाइब्रिड 109, हरियाणा ज्वार 513 आदि एवम दाने के लियेसीएस एच16,18,2325,30,46, हरयना ज्वार–513, हरा सोना, सीएसवी 10, 13,15,17,20,23,27, पी एसवी 2,5,6 इत्यादि है ।
- ज्वार की दाने हेतु फसल के लिये 10से 12 कि.ग्रा. / हे. तथा चारे हेतु 30–35 कि.ग्रा. बीज / हे. को पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 10–15 से मी रखते हुवे पंक्तियों में बुवाई करनी चाहिए।
- अधिक उपज प्राप्त कर्ने के लिये 80–100 कि.ग्रा. / हेनाइट्रोजन,60 कि.ग्रा. / हेफॉस्फोरस तथा 40 कि.ग्रा. / हे. पोटाश की मात्रा को प्रयोग करना चाहिये।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई के 2 दिन पश्चात तक एट्राजिन की बाज़ार में उपलब्ध 2 लीटरमात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से सामान रूप से छिड़काव करना चाहिए।
- इसके बाद 25 –30 दिन की फसल होने पर एक गुड़ाई या 2 ,4–डी (58 प्रतिशत) की 1.70 लीटर मात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से सामान रूप से छिड़काव करना चाहिए।

गन्ने की देखभाल

- वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा और तेज हवाओं के कारण जुलाई माह मे गन्ने की फसल गिरने का ज्यादा संकट बना रहता है, ऐसी स्थित में फसल गिरने से गन्ने की गुणवत्ता तथा उपज मे भारी नुकसान पहुंचता है।
- फसल को गिरने से बचाने के लिए जून–जुलाई माह मे दो कतारो के बीच नाली बनाकर निकाली गई मिट्टी को ऊपर चढ़ाया जाना चाहिए जिससे गन्ने की जड़ों को मजबूती मिल सके और अधिक पानी से होने वाली हानि से भी बचा जा सके। इसके बाद जमीन से 50 से.मी. ऊपर गन्ने की बंधाई कर देनी चाहिए। अगस्त माह में दूसरी बंधाई कर देनी चाहिए।
- यदि भूमि मे जल भराव की समस्या हो तो इस दशा मे जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अलावा गन्ने की पछेती बुवाई गेहूं आदि रबी फसलो की कटाई के बाद की गई है, तो उसमे समय से सिंचाई (वर्षा नही हुई है तो),निराई एवं गुड़ाई करके खरीफ ऋतु मे उगने वाले खरपतवारों को नियंत्रित रखना चाहिए। कपास की देखभाल
- यदि खेत मे नमी की कमी हो तो एक बार सिंचाई कर देना चाहिये। साथ ही वर्षा यदि अधिक हुयी है तो खेत मे जमा अतिरिक्त जल को उचित विधियों द्वारा जल निकास का उचित प्रबंधन करना अनिवार्य है।
- इस समय खरपतवारों का प्रकोप भी अधिक होता है। इनकी रोकथाम के लिए निकाई की जा सकती है। इसके अलावा इसी माह मे अत्यधिक व असमय वर्षा होने के कारण सामान्यता पौधों की ऊंचाई 1.5 मीटर से अधिक हो जाती है। जिससे उपज पर बुरा प्रभाव देखा गया है, जब पौधे की ऊंचाई 1.5 मीटर से अधिक हो जाए तो ऐसी अवस्था में पौधों की ऊपर वाली सभी शाखाओ की छटाई, सिकेटियर या (कैची) के द्वारा कर देना चाहिए।

तिलहन फसलों की बुवाई

- विभिन्न तिलहन फसलों जिनमें सोयाबीन, मूंगफली, तिल प्रमुख हैं, इन फसलों की खेती उन्नत तकनीकों का प्रयोग करके करें तो अधिक पैदावार के साथ–साथ अधिक लाभ भी प्राप्त किया जा सकता हैं।
- सोयाबीन की अनेक किस्में जिनमें क्लार्क 63, ब्रग्ग , पीके 416, पूसा 16, एसएल 295, एसएल 525, ली, हार्डी अहिल्या –1,2,4, जे एस 93–05, 95–10,335, 80–27, पंजाब 1, कालीटूर प्रमुख है, एम ए सी एस –58, एनआरसी 37, टाइप 49, दुर्गा, पंजाब 1 की कटाई मशीन द्वारा की जा सकती है।
- मूंगफली उन्नत किस्में गुच्छे वाली किस्मे (बंच टाइप) टी जी 37 I, गिरनार 1,2,3, एके–159, टी एम् वी –2,7,9, पोल–I, ज्योति एग्जॉटिक–1, एल जे–24फैलने वाली किस्मे (स्प्रैडिंग टाइप)टी एम् वी–3,4,8,10,एम्–145, 13, 335, पी जी –1, राज मूंगफली 3, जीजी–11, जी ए यू जी–10, अर्ध फैलने वाली किस्मे (सेमि स्प्रैडिंग टाइप)टी एम् वी–8, 10, सी–501 जीजी–20, एम–548 आदि को बुवाई के लिये प्रयोग किया जा सकता है।
- सोयाबीन की फसल के लिए 70–75 कि.ग्रा. / हे., तिल की फसल के लिए 4से 5 कि.ग्रा.तथा मूंगफली के लिए 100 से 120 कि.ग्रा. दाना (कर्नल) / हे.बीज की आवश्यकता होती है।
- बुआई से पहले बीज को थिराम (2ग्राम)+कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) या थिराम 3 ग्राम या ट्राई कोडेर्मा विरिडी 5–7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज इसके बाद राइजोबियम से उपचारित करना चाहिए।

राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम
सस्य विज्ञान संभाग
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली110012

रसोई

मूंग–ओट्स मसाला उत्तपम

(स्वस्थ, स्वादिष्ट और झटपट बनने वाला नाश्ता)

परिचय–

आज के समय में जब सेहत और स्वाद दोनों की जरूरत होती है, तब ऐसा नाश्ता जो प्रोटीन से भरपूर, हल्का, पचने में आसान और स्वादिष्ट हो एक वरदान जैसा लगता है। "मूंग–ओट्स मसाला उत्तपम" एक ऐसा ही व्यंजन है जिसमें मूंग दाल की पौष्टिकता और ओट्स का फाइबर, दोनों का संपूर्ण मेल है। यह रेसिपी बिना किसी फर्मेंटेशन के बनती है, जिससे समय की बचत भी होती है और स्वाद भी बरकरार रहता है।

आवश्यक सामग्री–

(2–3 लोगों के लिए)

- मूंग दाल– 1/2 कप (3–4 घंटे भीगी हुई)
- ओट्स– 1/2 कप (हल्के भुने)
- प्याज– 1 (बारीक कटा)
- टमाटर– 1 छोटा
- गाजर– (कप (कद्दूकस किया हुआ)
- शिमला मिर्च– 1/4 कप
- हरी मिर्च, अदरक, धनिया– स्वादानुसार
- जीरा– 1/2 टीस्पून
- नमक, काली मिर्च– स्वादानुसार
- पानी– आवश्यकतानुसार
- तेल– तवे पर सेंकने के लिए

बनाने की विधि–

मूंग दाल को भिगोकर अदरक और हरी मिर्च के साथ दरदरा पीस लें। इसमें ओट्स, नमक, जीरा, काली मिर्च डालें और घोल को पानी से गाढ़ा पकोड़े जैसा बनाएं। सब्जियाँ (प्याज, गाजर, टमाटर, शिमला मिर्च) और धनिया इसमें मिला लें। तवे को गरम कर हल्का तेल डालें और घोल का एक भाग फैलाएं। मध्यम आंच पर दोनों तरफ से सुनहरा सेंकें।

परोसने के सुझाव–

इसे नारियल की चटनी, टमाटर सॉस या हरी चटनी के साथ गर्मागर्म परोसें। चाहे सुबह का नाश्ता हो या शाम की भूख– यह उत्तपम हर समय के लिए उपयुक्त है।

बरसात में होने वाली बीमारियाँ और उनसे बचाव के उपाय

बरसात का मौसम जहाँ एक ओर प्रकृति की हरियाली और ठंडक लेकर आता है, वहीं दूसरी ओर यह कई बीमारियों का भी प्रवेश द्वार बनता है। वातावरण में बढ़ी हुई नमी, गंदा पानी और मच्छरों का प्रकोप मिलकर संक्रमण और संक्रामक बीमारियों को जन्म देते हैं। विशेषकर जून और जुलाई की शुरुआत में जब बारिश धीरे–धीरे तेज होती है, तब हमारा शरीर मौसम परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। ऐसे में सावधानी और जानकारी दोनों जरूरी हो जाती है।

बरसात की शुरुआत में होने वाली प्रमुख बीमारियाँ

वायरल बुखार–

सामान्य वायरल संक्रमण सबसे आम बीमारी है। इसमें शरीर दर्द, गले में खराश, खांसी और बुखार होता है। यह संक्रमण वायरस के कारण फैलता है, जो गीले और ठंडे वातावरण में तेजी से फैलता है।

सर्दी–जुकाम–

नमी और ठंडी हवा के संपर्क में आने से नाक बहना, छींकें आना, हल्का बुखार और गले में दर्द जैसे लक्षण होते हैं।

डेंगू और मलेरिया–

ये मच्छरों के काटने से फैलने वाली बीमारियाँ हैं। डेंगू एडिस मच्छर के काटने से और मलेरिया एनोफिलीज मच्छर से फैलता है। ये मच्छर गंदे पानी या ठहरे पानी में पनपते हैं।

टाइफाइड (मियादी बुखार)–

यह दूषित भोजन और पानी से फैलता है। इसमें तेज बुखार, कमजोरी, दस्त या कब्ज, पेट दर्द जैसे लक्षण होते हैं।

चिकनगुनिया–

यह भी मच्छर जनित बीमारी है जिसमें तेज बुखार के साथ शरीर, खासकर जोड़ों में असहनीय दर्द होता है।

बचाव के उपाय

पीने का पानी उबालकर या फिल्टर करके पिएं–

बारिश में जल स्रोत अधिकतर दूषित हो जाते हैं। सुरक्षित और स्वच्छ पानी का सेवन करें।

भीगने से बचें, कपड़े सूखे रखें–

अगर बारिश में भीग जाएँ तो तुरंत कपड़े बदलें और शरीर को अच्छी तरह पोंछें। नमी से फंगल इंफेक्शन हो सकते हैं।

मच्छर से बचाव करें–

मच्छरदानी, रेपलेंट क्रीम, फुल बाजू के कपड़े पहनें। घर और आसपास पानी जमा न होने दें।

संतुलित और ताजा भोजन लें–

घर का बना ताजा और गर्म भोजन ही खाएँ। बाहर के खुले खाने (पकौड़े, चाट आदि) से परहेज करें क्योंकि इनमें बैक्टीरिया पनप सकते हैं।

व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें–

हाथों को खाने से पहले और बाद में साबुन से जरूर धोएँ। गंदे नाखून, गीले पैर और नमी त्वचा संक्रमण फैला सकते हैं।

फिटनेस और इम्युनिटी बनाए रखें–

हल्की–फुल्की कसरत करें, नींबू पानी, तुलसी–शहद, काढ़ा आदि पिएं ताकि रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे।

बेहतर गुणवत्ता
बेहतर कल
के लिए
सर्वम
बहुआयामी
शक्तिशाली
लचीलापन
Simodis
360°
Miravis Duo
syngenta

ADVANTA
हरी भी, भरी भी,
ADV 839 सबसे खरी भी।
ADVANTA
F1 Hybrid Bhendi
ADV 839
ए डी वी 839

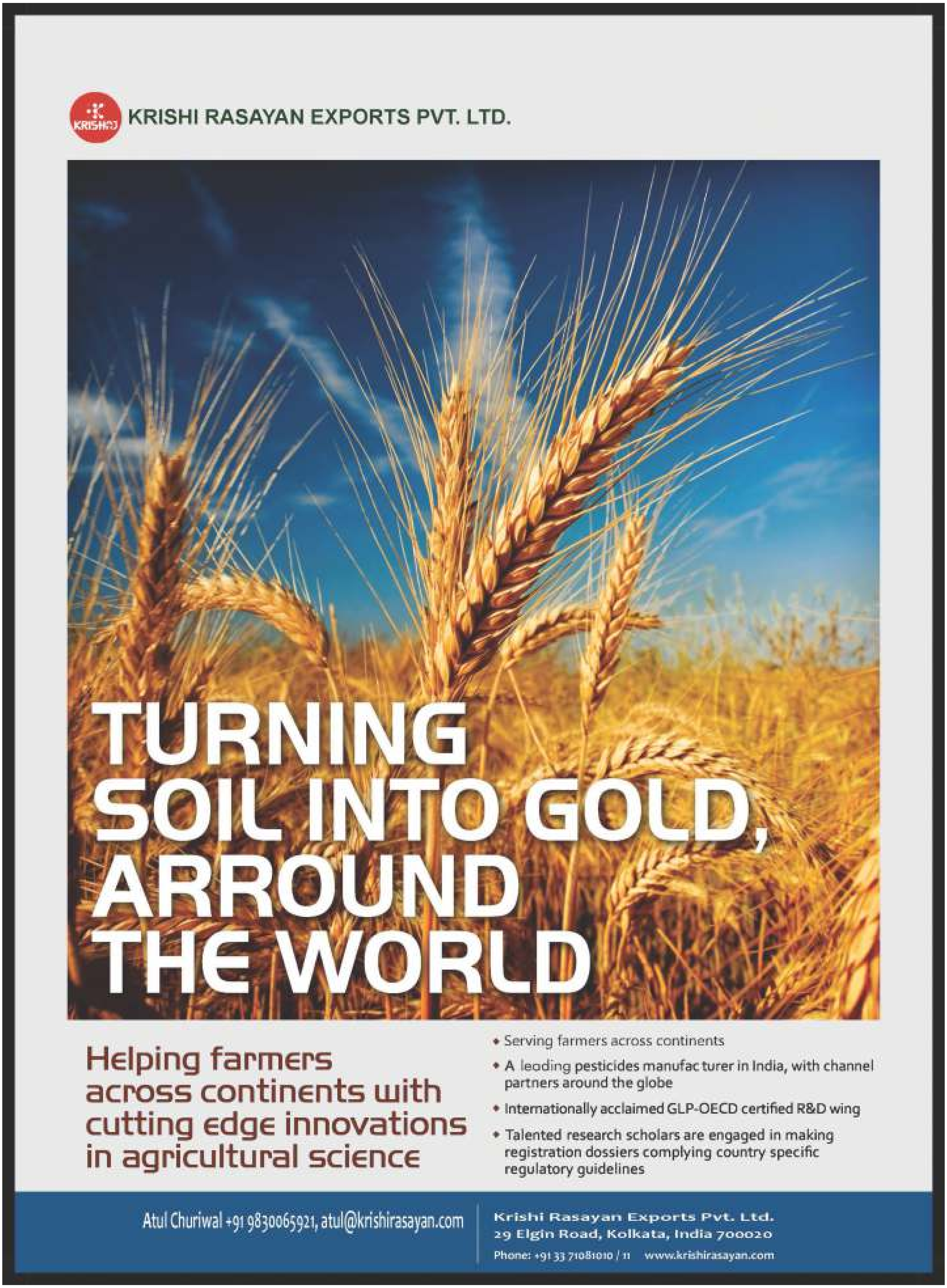
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
TURNING SOIL INTO GOLD, ARROUND THE WORLD
Helping farmers across continents with cutting edge innovations in agricultural science
• Serving farmers across continents
• A leading pesticides manufac turer in India, with channel partners around the globe
• Internationally acclaimed GLP-OECD certified R&D wing
• Talented research scholars are engaged in making registration dossiers complying country specific regulatory guidelines
Atul Churiwal +91 9830065921, atul@krishirasayan.com
Krishi Rasayan Exports Pvt. Ltd.
29 Elgin Road, Kolkata, India 700020
Phone: +91 33 71081010 / 11 www.krishirasayan.com

Organized By

Radeecal communications

GPDFA

गुजरात का नंबर 1 कृषि-प्रदर्शन

नई कृषि तकनीक
के लिए विशाल प्रदर्शन

विशेष आकर्षण

लाइव पशु स्पर्धा एवं पशु प्रदर्शनी

14th Agri Asia®

Asia's Prime Exhibition On Agriculture Technology

१८-१९-२० सितम्बर २०२५

हेलीपैड एग्जिबिसन सेन्टर, गांधीनगर, गुजरात

250+ प्रदर्शक

1,25,000+ विजिटरो की कुल संख्या

100+ डीलर्स भारत भर में

500+ प्रतिनिधि

20+ सम्मेलन वक्ता

50+ अंतर्राष्ट्रीय खरीदार

अपना स्टॉल अभी बुक करें

In Association with

GPDFA

Supported By

GAMMA

IGMA

Conference Partner

Agro House

Concurrent Events

DLP EXPO ASIA
DAIRY LIVESTOCK AND POULTRY EXPO

AGRI COMPONENTS
EXPO ON AGRICULTURE COMPONENTS ASIA

+91 91738 26807

E: agriasia@agriasia.in | W: www.agriasia.in

Coromandel
FUTURE POSITIVE
क्योंकि हम किसान जानते हैं,
सब हमारे भरोसे हैं,
इसलिए हमारा भरोसा! GROMOR
जिनके भरोसे दुनिया,
उनका भरोसा ग्रोमोर
DON'T USE HOOKS
FERTILISER
GROMOR
GroPlus
20:20:0:13 GROMOR
14:35:14
15:15:15:09 (S) GROMOR

AGMA
Energy Pvt. Ltd.
KRISHAJ
50 Years of Cultivating Prosperity
के-मैक्स एनर्जी
मिट्टी सही तो
फसल बाहुबली
प्रयोग मात्रा
4 किलो ग्राम
प्रति एकड़
KRISHAJ
K MAX
ENERGY
UPT
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
*अधिक जानकारी के लिए के–मैक्स नोलेज़ सेन्टर
1800-572-5065 पर सम्पर्क करें।
ECOCERT
द्वारा अनुमोदित
UPT
अल्टीमेट परफॉरमेंस तकनीक द्वारा तैयार
तकनीक स्पेन की
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
Technology from
ALGAENERGY
Spain

RNI No. DELHIN/2014/59516

Delhi Postal Regd. No.:DL(E)-20/5477/2024-26
Published on 5th & Posted on 7th - 8th of Every Month